وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

और सिर्फ़ तुझ से हम मदद चाहते हैं।

सुबह शाम के अज़कार की प्राथनाऐं ।

eBook

وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

और सिर्फ़ तुझ ही से हम मदद चाहते हैं!

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सुबह शाम के अज़कार व हिफ़ाज़त कि प्रार्थनाऐं!

يَآَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا

اذْكُرُوا اللّٰهَ

ذِكْرًا كَثِيْرًا 0

وَّ سَبِّحُوْهُ

بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا 0

(अलएहज़ाब:४१-४२)

''ए लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह
को कसरत से याद करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह करते रहो''

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

फ़ेहरिस्त

नं:संख्या	विषय /सूची	पन्ना
१	भूमिका/मुकद्दमा	4-5
२	हम्द-ओ-सना	6
३	दरूद शरीफ़	6
४	सुबह शाम कि प्राथनाऐं	7-16
५	सुरक्षा कि प्राथनाऐं	17-20
६	रात भर सुरक्षा के लिए	21
७	दुशमन के शर से सुरक्षा के लिए	22-23
८	सोते मे घबराहठ के समय	24
९	बुरा सपना देखने पर	24
१०	वसवसों से निजात के लिए	25-26
११	नज़र लगने पर	27
१२	जादू,जिन्नात, के शर से सुरक्षा के लिए	28-29
१३	बिमारियों से शिफ़ा के लिए	30-31
१४	रोगी कि मिज़ाज पुर्सि के समय	32-33
१५	मुसीबत ज़दा और बिमार को देख कर	33
१६	मुसिबत और ग़म कि ख़बर सुनने पर	33
१७	मय्यत कि मग़फ़िरत के लिए	34-35
१८	गुनाहों कि बख़्शिश के लिए	36-40
१९	रंज ओ ग़म के अज़ाले के लिए	41-43
२०	मक़बूल दुआऐं	44-47
२१	दुआ-ए-इस्तिख़ारा	48
२२	फ़ज़ाइल और हवालेजात	49...

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मुक़द्दमा/भूमिका

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۝ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۝

“सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का पालने वाला है। बहुत क्रपाशील और अत्यंत दयावान है।बद्ले के दिन का मालिक है। हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मदद चाहते हैं”

इंसान अपनी ज़िंदगी मे विभिन्न प्रकार के ड़र और ग़म का शिकार रहता है । जिन से निजात के लिए वह किसी एसी हस्ती कि तरफ़ रुजूउ प्रव्रत करना चाहता है जो उन्का मुदावा/उपचार कर सके उस मे कोई शक नही के वह ज़ात सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही की है जो हमारी मदद करने पर पूरी तरह क़ादिर है। इसलिए हमें हर मुशकिल मे उसी कि तरफ़ रुजूउ करना चाहिए वह किसी को कुछ देना चाहे तो कोई उसको रोक नहीं सकता और न ही कोई उसके फ़ैसलो/निर्णय को बदल सकता है पस हमें उसी से दुआ माँगनी चाहिए- रब का हुकुम है!

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَ يَكْشِفُ السُّوْٓءَ...

“कौन है जो बेक़रार की दुआ सुन ता है जब वह उसे पुकारता है और उसकी तकलीफ़ दूर करता है” (अलनमल:६२)

ड़र और ग़म के उपचार के लिए अधिक से अधिक अल्लाह का ज़िक्र और तस्बीह भी करनी चाहिए ख़ासकर सुबह व शाम के समय मे जैसा के रब का हुकुम है!

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝ وَّ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا (अल एहज़ाब:४१-४२)

''ए लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह को कसरत से याद करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह करते रहो''

इस सिलसिले मे यह बात याद रखना ज़रुरी है के अल्लाह का ज़िक्र उसके सिखाए हुए नियमों के अनुसार करना चाहिए रब का हुकुम है...

और उसको याद करो जैसे उसने तुम्हारी रहनुमाई की ...وَ اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ...

(अलबक़रा:१९८)

यानि कठिनाईयों को दूर करने के लिए ख़ुद के बनाए हुए नियमों से संयम किया जाए पस इस किताब मे सुबह व शाम के अज़कार के अलावा एसी दुआए शामिल कि गई हैं जो मुसीबतों,परेशानियों,आफ़ात और बलाओ से हिफ़ाज़त के लिए सुन्नत नबुवि से साबित हैं-

उनका पूरे ख़ुशूअ और दिल कि हुज़ूरी से पढ़ना इन्शा अल्लाह फ़ायदा मन्द होगा-

अल्लाह तआला हम सब को अपने ज़िक्र और शुक्र कि तौफीक़ अता फ़रमाए-

-आमीन!

फ़रहत हाशमी

(१५ आगस्त २०१० इ)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

(हम्द-ओ -सना) अल्लाह की प्रशंसा और तस्बीह

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ ١

पाक है अल्लाह अल्लाह और उसी की प्रशंसा है,अज़्मत/ बड़ाई वाला है!

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا

وَ سُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ٢

अल्लाह सब से बड़ा है,बहुत बड़ा और कसरत से हर तरह की प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है और सुबह शाम अल्लाह की पाकी है ।

दरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ١

अए अल्लाह मुहम्मद (ﷺ) पर और उन की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ

ए अल्लाह! अपने बन्दे/गुलाम और रसूल मुहम्मद(ﷺ) पर इसी तरह रहमत/दया कर जिस तरह तू ने रहमत/दया की इबराहीम (अ.स) पर और बरकत/विभूति उतार मुहम्मद(ﷺ) पर और मुहम्मद(ﷺ) की आल पर जिस तरह बरकत उतारी इबराहीम(अ.स) पर और इबराहीम(अ.स)की आल पर ।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सुबह और शाम की प्रार्थनाऐं

١. سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَ رِضَا نَفْسِهٖ وَ زِنَةَ عَرْشِهٖ وَ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

(सुबह ३ बार)

१-अल्लाह अपनी प्रशंसा के साथ पाक है उस की स्रष्टि की गिन्ती के बराबर और उसकी ज़ात कि रज़ा/ख़ुशी के बराबर और उसके राजसिंहसन/अर्श के वज़न और उसके कलिमात/शब्दों की स्याही के बराबर।

٢.اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

(सुबह शाम १० बार)

२-ऐ अल्लाह रहमतें भेज नबी मुहम्मद(ﷺ)पर और उनकी आल पर !

٣.اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ
مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَاالَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ
ۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ
لَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ (सुबह शाम १ बार)

३.अल्लाह तआला ही सच्चा मअबूद है,जिस के सिवा कोई मअबूद नहीं,जो ज़िन्दा है,और सबका थामने वाला हैं,जिसे न ऊँघ आए न नींद उसकी मिल्कियत में ज़मीन व आसमान कि सभी चीज़े है,कौन है जो उस के हुक्म के बिना उसके सामने सिफ़ारिश कर सके,वह जानता हैं जो उनके सामने हैं जो उनके पीछे है और वह उसके इल्म में से किसी चीज़ का घेरा नहीं कर सकते,लेकिन वह जितना चाहे

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

उसकी कुर्सी की वुसअत ने ज़मीन व आसमान को घेर रखा है,वह अल्लाह तआला उनकी हिफ़ाज़त से न थकता है और न ऊबता हैं,वह तो बहुत बड़ा है !

٤.اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَ بِكَ اَمْسَيْنَا وَ بِكَ نَحْيَا وَ بِكَ نَمُوْتُ وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ

(सुबह १ बार)

४-ऐ अल्लाह! तेरे आदेश से हम ने सुबह की और तेरे आदेश से हम ने शाम कि और तेरे आदेश से हम जीते हैं और तेरे आदेश के साथ हम मरते हैं और हमें तेरी ही तरफ़ पलट कर जाना है!

शाम के समय इस तरह पढ़े |

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَ بِكَ اَصْبَحْنَا وَ بِكَ نَحْيَا وَ بِكَ نَمُوْتُ وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ (शाम १ बार)

ऐ अल्लाह! तेरे आदेश से हम ने शाम की और तेरे आदेश से हम ने सुबह कि और तेरे नाम से हम जीते हैं और तेरे नाम के साथ हम मरते हैं और तेरी ही तरफ़ पलट कर जाना है !

٥.اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَ لَكَ الشُّكْرُ (सुबह १ बार)

५-ऐ अल्लाह! इस सुबह के वक़्त जो भी कोई नेअमत मुझ पर या किसी और भी दुसरी मखलूक़ पर है वह सिर्फ़ तेरी ही तरफ़ से है तू तन्हा है,तेरा कोई शरीक नहीं,तेरे ही लिए तारीफ़ है और तेरे ही लिए शुक्र है!

٦. اَصْبَحْنَا عَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ وَ عَلٰى كَلِمَةِ الْاِخْلَاصِ وَ عَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ ﷺ وَ عَلٰى مِلَّةِ اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّ مَا كَانَ مِنْ الْمُشْرِكِيْن

(सुबह शाम १ बार)

६- हम ने सुबह की इसलामी स्वभाव पर,सच्ची बात पर और अपने नबी (ﷺ) के दीन पर और अपने बाप हज़रत इब्राहीम(अ.स) के दीन पर जो एकाग्रचित मुस्लिम थे और वह हर गिज़ मुशरिकों मे से नहीं थे।

.शाम के वक़्त اَصْبَحْنَا **कि जगह** اَمْسَيْنَا **पढ़े**

٧.اَللّٰهُمَّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ، عَالِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ، لَا عَالِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَ مَلِيْكَهُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَ مِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَ اَنْ اَقْتَرِفَ وَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْءً اَوْ اَجُرَّهُ اِلٰى مُسْلِمٍ (सुबह शाम १ बार)

७- ऐ अल्लाह! आकाशों और धरती का पैदा करने वाले,छुपे और खुले के जानने वाले,तेरे सिवा कोई मअबूद/ ख़ुदा नहीं, हर चीज़ का रब और उसका मालिक है, मैं तेरी शरण चाहता हूँ अपने नफ्स के छल/उपद्रव से और शैतान के और उसके शिर्क के छल से और यह के अपनी जान को किसी बुराई में दूषित करूँ या दूसरे मुसल्मान को उस्की तरफ़ माईल/प्रव्रत करूँ।

٨. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَ مَلٰئِكَتِكَ وَ جَمِيْعَ خَلْقِكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَ رَسُوْلُكَ

(सुबह शाम १ बार)

८.ऐ अल्लाह! मैं ने सुबह की,मैं गवाह करता हूँ तुझ को और तेर अर्श उठाने वालों को और तेरे फ़रिशतों को और तेरी सारी स्रष्टि को के बेशक तू ही अल्लाह है,तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं,तू अकेला है,तेरा कोई साझी नहीं और नि:संदेह मुहम्मद (ﷺ) तेरे बन्दे और रसूल हैं।

.शाम को اَصْبَحْتُ **कि जगह** اَمْسَيْتُ **पढ़े ।**

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

٩.اَصْبَحْنَا وَ اَصْبَحَ الْمُلْكُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ خَيْرَ هٰذَا الْيَوْمِ فَتْحَهُ وَ
نَصْرَهُ وَ نُوْرَهُ وَ بَرَكَتَهُ وَ هُدَاهُ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَ شَرِّ مَا قَبْلَهُ وَ شَرِّ مَا
بَعْدَهُ(सुबह १ बार)

९-हम ने सुबह की और सारे संसार ने सुबह की अल्लाह के लिए,जो सारे जहाँ का रब है,ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से आज के दिन की भलाई,उस की कामयाबी, उस्की मदद और उसका नूर और उस की बरकत और उस की हिदायत माँगता हूँ- और मैं तेरी पनाह/शरण चाहता हूँ उस शर/उपद्रव से जो उस में है और जो उससे पहले और जो उसके बाद है !

शाम के समय इस तरह पढ़े !

اَمْسَيْنَا وَ اَمْسَی الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فَتْحَهَا مَا
قَبْلَهَا وَ نَصْرَهَا وَ نُوْرَهَا وَ بَرَكَتَهَا وَ هُدَاهَا وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهَا وَ شَرِّ بَعْدَهَا وَ
شَرِّ مَا بَعْدَهَا

(शाम १ बार)

हम ने शाम की और सारे संसार ने शाम की अल्लाह के लिए,जो सारे जहाँ का रब है,ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से आज की रात की भलाई,उस की कामयाबी,उस की मदद, उस का नूर, उस की बर्कत और उस की हिदायत माँगता हूँ और मै तेरी पनाह चाहता हूँ उस शर से जो उसमे है और जो उससे पहले और जो उसके बाद है।

١٠.اَصْبَحْنَا وَ اَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ
الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ، رَبِّ اَسْاَلُكَ خَيْرَ مَا فِیْ هٰذَا الْيَوْمِ وَ
خَيْرَ مَا بَعْدَهُ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِیْ هٰذَا الْيَوْمِ وَ شَرِّ مَا بَعْدَهُ، رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ
مِنَ الْكَسَلِ وَ سُوْءِ الْكِبَرِ، رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِی النَّارِ وَ عَذَابٍ فِی الْقَبْرِ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

(सुबह १ बार)

१०- हम ने सुबह की और सारे संसार ने सुबह की अल्लाह के लिए,और सारी तरीफ़ अल्लाह के लिए है,अल्लाह के सिवा कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं,वह अकेला है उस का कोई साझी नहीं उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए सारी प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर क़ादिर/इख़तियार है! ऐ मेरे रब मै तुझ से आज के दिन की और जो उस दिन के बाद है उसकी भलाई माँगता हूँ,और मै तेरी आश्र्य चाहता हूँ आज के दिन और जो उसके बाद है उस की बुराई से,ऐ मेरे रब मै तेरी आश्र्य चाहता हूँ सुस्ती और बुरे निकृष्ट बुढ़ापे से! ऐ मेरे रब मै तेरी आश्र्य चाहता हूँ आग के अज़ाब से और कब्र के अज़ाब से !

.शाम के समय इस तरह पढ़े !

اَمْسَيْنَا وَ اَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ، رَبِّ اَسْاَلُكَ خَيْرَ مَا فِىْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ خَيْرَ مَا بَعْدَهَا وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِىْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ شَرِّ مَا بَعْدَهَا، رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَ سُوْءِ الْكِبَرِ، رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِى النَّارِ وَ عَذَابٍ فِى الْقَبْرِ(शाम १ बार)

हम ने शाम की और सारे संसार ने शाम की अल्लाह के लिए,और सारी तरीफ़ अल्लाह के लिए है,अल्लाह के सिवा कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं,वह अकेला है उस का कोई साझी नहीं उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए सारी प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर क़ादिर/इख़तियार है! ऐ मेरे रब! मै तुझ से आज की रात की और जो उस के बाद है उसकी भलाई माँगता हूँ,और मै तेरी आश्र्य चाहता हूँ आज कि रात और जो उसके बाद है उसकी बुराई से,ऐ मेरे रब! मै तेरी आश्र्य चाहता हूँ सुस्ती और बुरे निकृष्ट बुढ़ापे से! ऐ मेरे रब! मै तेरी आश्र्य चाहता हूँ आग के अज़ाब से और कब्र के अज़ाब से !

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

(सुबह शाम १ बार) ११.رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا

११-मै अल्लाह के मअबूद/ख़ुदा होने पर,और इसलाम के दीन होने पर और मुहम्म्द(ﷺ) के नबी होने पर राज़ी हूँ।

(शाम १ बार) १२.اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

१२-मैं पनाह/आश्रय माँगता हूँ अल्लाह के सारे कलिमात के साथ,हर उस चीज़ के शर/उपद्रव से जो उसने पैदा की।

१३.بِسْمِ اللهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَ لَا فِى السَّمَآءِ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (सुबह शाम ३ बार)

१३-अल्लाह के नाम से, वह ज़ात जिसके नाम के साथ कोई चीज़ धरती मे ना आकाश मे नुक़्सान दे सकती और वह सुनने वाला,जानने वाला हैं।

१४.اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَدَنِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ سَمْعِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَصَرِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ
(सुबह शाम ३ बार)

१४-ऐ अल्लाह!मेरे बदन में मुझे आफ़ीयत/सुकून दे, ऐ अल्लाह!मेरे कानों मे मुझे आफ़ीयत/सुकून दे,ऐ अल्लाह! मेरी आँखों में मुझे आफ़ीयत/सुकून दे,तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं है!

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

١٥.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَ الْفَقْرِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ (सुबह शाम ३ बार)

१५-ऐ अल्लाह! निसंदेह मै तेरी पनाह/शरण मे आता हूँ, कुफ़्र और ग़रीबी से और मै तेरी पनाह/शरण मे आता हूँ, अज़ाबे क़ब्र/कष्ट म्रत भवन से,तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं है!

١٦.يَاحَیُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِیْ شَاْنِیْ كُلَّهٗ وَ لَا تَكِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَيْنٍ (सुबह शाम १ बार)

१६-ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले और हमेशा क़ाईम रहने वाले,तेरी रहमत की वजह से मै तुझ से प्रार्थना करता हूँ के मेरे सब कामों कि इस्लाह/सुधार करदे और पलक झपकने तक के लिए भी मुझे मेरे नफ़स के हवाले मत कर।

١٧.اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَ اَنْتَ تَهْدِيْنِیْ وَ اَنْتَ تُطْعِمُنِیْ وَ اَنْتَ تَسْقِيْنِیْ وَ اَنْتَ تُحْيِيْنِیْ (सुबह शाम १ बार)

१७-ऐ अल्लाह! तू ने मुझे जन्म दिया और तू मुझे हिदायत देता है और तू ही मुझे खिलाता है और तू ही मुझे पिलाता है और तू ही मुझे मृत्यु देता है और तू ही मुझे ज़िन्दगी देता है।

١٨.اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَ اَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَ وَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَ اَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ (सुबह शाम १ बार)

१८-ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं ,तू ने मुझे जन्म दिया और मै तेरा दास/गुलाम हूँ,मै अपनी योग्यता अनुसार तुझ से किए गए प्रण और वचन पर जमा हुआ हूँ ,मै तेरी आश्रय चाहता हूँ अपनी की हुइ हर बुराई से ,में तेरी हर क्रपा को स्वीकार करता हूँ,अपने हर पाप को स्वीकार करता हूँ मुझे क्षमा/माफ़ कर के तेरे सिवा कोई पापों को क्षमा करने वाला नहीं।

١٩.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ فِیْ
دِيْنِیْ وَ دُنْيَایَ وَ اَهْلِیْ وَ مَالِیْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْعَوْرَاتِیْ وَ آمِنْ رَّوْعَاتِیْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ
بَيْنَ يَدَیَّ وَ مِنْ خَلْفِیْ وَ عَنْ يَمِيْنِیْ وَ عَنْ شِمَالِیْ وَ مِنْ فَوْقِیْ وَاَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ
اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ (सुबह शाम १ बार)

१९-ऐ अल्लाह! बे शक मै आप से दुनिया और आखिरत में आफ़ीयत/सुकून माँगता हूँ,ऐ अल्लाह! बेशक मै माँगता हूँ आप से क्षमा पापों की,और अपने दीन/धर्म,संसार,कुठूँब और संपत्ती की आफ़ीयत/सुकून का प्रश्न करता हूँ,ऐ अल्लाह! छिपाले मेरी बुराईयाँ और निशचिन्त कर दे मुझे ड़र की चिज़ों से,ऐ अल्लाह सुरक्षा कर, मेरे सामने से और मेरे पीछे से और मेरे दाऐं और मेरे बाऐं से और मेरे ऊपर से और ऐ अल्लाह! मै आश्रय लेता हूँ आप बड़ाई की के मै मारा जाऊँ नीचे से।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

२०. قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَ لَمْ يُوْلَدْ۝ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ۝

(सुबह शाम ३ बार)

२०-(आप)कह दीजिए! के वह अल्लाह एक ही है! अल्लाह तआला बेनियाज़ है! न उससे कोई पैदा हुआ और न उसे किसी ने पैदा किया! और न कोई उसका समकक्ष (हमसर) है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

٢١.قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ۞ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ۞ وَ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ۞ وَ مِنْ شَرِّ
النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ۞ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۞(सुबह शाम ३ बार)

२१- आप कह दीजिए! के मै सुबह के रब की पनाह/शरण में आता हूँ! हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है! और अँधेरी रात कि तारीकी/अंधकार की बुराई से जब कि उसका अँधेरा फैल जाए!और गाँठ (लगाकर उन)में फूंकने वालियों की बुराई से(भी)!और द्धेष(हसद)करने वाले की बुराई से भी जब वह द्धेष (हसद) करे!

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

٢٢.قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ۞ مَلِكِ النَّاسِ۞ اِلٰهِ النَّاسِ۞ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ
الْخَنَّاسِ۞ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ۞ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ۞

(सुबह शाम ३ बार)

२२-आप कह दिजिए! मै लोगों के रब की शरण/पनाह मे आता हूँ! लोगों के मालिक की(और)लोगों के मअबूद/ख़ुदा की! वसवसा/शंका डालने वाले,पीछे हट जाने वाले कि बुराई से। जो लोगों के सीनों में शंका(वसवसा)डालता है! (चाहे) वह जिन्न में से हो या इन्सान में से !

٢٣.حَسْبِيَ اللهُ، لَا اِلٰهِ اِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ (सुबह शाम ७ बार)

२३-मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है,उसके सिवा कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं,मै ने उस पर विशवास किया और वह बड़े अर्श का मालिक है!

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

٢٤.لَا اِلٰهِ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٍ (सुबह शाम १ बार)

२४-अल्लाह के सिवा कोइ मअबूद/ख़ुदा नहीं, वह एक है उसका कोई साझी नहीं,उसी के लिए बाद्शाहत है और वही प्राशंसा के क़ाबिल है-और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है!

٢٥.سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهِ (सुबह शाम १०० बार)

२५-अल्लाह पाक है और उसी कि प्रशंसा है!

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सुरक्षा/हिफ़ाज़त की प्रार्थनाऐं

तऊज़्ज़ात

١.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الْاَخْلَاقِ وَ الْاَعْمَالِ وَ الْاَهْوَاءِ

१.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ बुरे आचरण,कार्य और तमन्नाओं से।

٢.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَ مِنْ شَرِّ مَا لَمْ اَعْمَلْ

२.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ इस चीज़ के शर से जो मै ने किया और उस चीज़ के शर से जो मै ने नहीं किया।

٣.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ الْبَرَصِ وَ الْجُنُوْنِ وَ الْجُذَامِ وَ مِنْ سَیِّءِ الْاَسْقَامِ

३.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ बर्स,पागल्पन,कोड़्ह और ख़तरनाक बिमरियों से ।

٤.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ وَ دَرَكِ الشَّقَاءِ وَ سُوْءِ الْقَضَاءِ وَ شَمَاتَةِ الْاَعْدَاءِ

४.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ गंभीर मुसिबत और कठिनाईयों से, बद्नसीबी पाने से,बुरी तक़्दीर/ नसीब और दुशमनों के खुश होने से।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

٥.اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ الْفَقْرِ وَ الْقِلَّةِ وَ الْذِّلَّةِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ

५.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ ग़रीबी से कमी और बेइज़्ज़ती और तेरी शरण माँगता हूँ इस से के ज़ुल्म करूँ या ज़ुल्म किया जाऊँ ।

٦.اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَ تَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَ فُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ وَ جَمِيْعِ سَخَطِكَ

६.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ तेरी दी हुई नेमत के छिन जाने से तेरी दी हुई आफ़ियत (स्कून) के बदल जाने से,तेरी सज़ा अचानक आ जाने से और तेरी हर तरह की नाराज़गी से।

٧.اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ شَرِّ سَمْعِيْ وَ مِنْ شَرِّ بَصَرِيْ وَ مِنْ شَرِّ لِسَانِيْ وَ مِنْ شَرِّ قَلْبِيْ وَ مِنْ شَرِّ مَنِيِّي

७. ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ अपने कान की बुराई से, आँख की बुराई से ज़बान की बुराई दिल की बुराई से और अपनी बुराई से।

٨.اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِن عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَ مِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَ مِنْ نَّفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَ مِنْ دَعْوَةٍ لَّا يُسْتَجَابُ لَهَا

८.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ इस इल्म से जो फ़ायदा ना दे,उस दिल से जो ना ड़रे,उस नफ़्स से जो सैर ना हो और उस दुआ से जो क़ुबूल ना की जाए ।

٩.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُوْعِ فَاِنَّهُ بِئْسَ الضَّجِيْعُ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخِيَانَةِ
فَاِنَّهَا بِئْسَتِ الْبِطَانَةُ

९.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ भूख से क्यों के वह बद्तरीन साथी है और तेरी शरण माँगता हूँ ख़ियानत से क्यों के वह बदतरीन राज़दार है।

١٠.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ الْعَجْزِ وَ الْكَسَلِ وَ الْجُبْنِ وَ الْهَرَمِ وَ الْبُخْلِ وَ اَعُوْذُ
بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَ الْمَمَاتِ

१०. ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ आजिज़ी (मजबूरी),सुस्ती, बुज़्दिली, बहुत बुढ़ापे और बुख्ल से और मै तेरी शरण माँगता हूँ क़बर के अज़ाब से और ज़िन्द्गी और मौत के फ़ितनों से।

١١.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ يَوْمِ السُّوْءِ وَ مِنْ لَيْلَةِ السُّوْءِ وَ مِنْ سَاعَةِ السُّوْءِ وَ
مِنْ صَاحِبِ السُّوْءِ وَ مِنْ جَارِ السُّوءِ فِیْ دَارِ الْمُقَامَةِ

११.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ बुरे दिन और बुरी रात से,बुरी घड़ी और बुरे दोस्त से और रहने की जगह मे बुरे पड़ोसी से।

١٢.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اُرَدَّ اِلَی اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا
وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الصَّدْرِ وَ بَغْيِ الرِّجَالِ

१२.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ उस से के मै बहुत बुढ़ापे को पहूंच जाऊँ और मै दुनिया के फ़ित्ने से तेरी शरण माँगता हूँ और मै सिने के फ़ित्ने से और लोगो कि सरकशी/नफ़रमानी से तेरी शरण माँगता हूँ ।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

١٣.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ التَّرَدِّیْ وَ الهَدْمِ وَ الْغَرَقِ وَ الْحَرِيْقِ وَ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ يَّتَخَبَّطَنِیَ الشَّيْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِيْلِكَ مُدْبِرًا وَّ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَمُوْتَ لَدِيْغًا

१३. ऐ अल्लह निसंदेह मै गिर कर मरने,दब कर मरने,डूब कर मरने और जल कर मरने से तेरी शरण माँगता हूँ और मै तेरी शरण माँगता हूँ उस से के मौत के समय शैतान मुझे उचक ले और मै तेरी शरण माँगता हूँ उस से के तेरे रास्ते में पीठ फ़ेरते हुए मारा जाऊँ और मै तेरी शरण माँगता हूँ उस से के मेरी मौत (ज़ेह्रीले जानवर के) ड़स्ने से वाक़े/घठित हो।

١٤.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَ الْكَسَلِ وَ الْجُبْنِ وَ الْبُخْلِ وَ الْهَرَمِ وَ الْقَسْوَةِ وَ الْغَفْلَةِ وَ الْعَيْلَةِ وَ الذِّلَّةِ وَ الْمَسْكَنَةِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِوَ الْكُفْرِ وَ الْفُسُوْقِ وَ الشِّقَاقِ وَ النِّفَاقِ وَ السُّمْعَةِ وَ الرِّيَاءِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الصَّمَمِ وَ الْبَكَمِ وَ الْجُنُوْنِ وَ الْجُنُوْنِ وَ الْجُذَامِ وَالْبَرَصِ وَ سَيِّيءِ الْاَسْقَامِ

१४.ऐ अल्लाह निसंदेह मै तेरी शरण माँगता हूँ आजिज़ी(बेबसी)और सुस्ती से, बुज़्दिली से और बुख्ल(कन्जूसी)से,बहुत बुढापे,दिल की सख़्ती और ग़फ़लत से, गरिबी,ज़िल्ल्त और नादारी से और मै तेरी शरण माँगता हूँ मुह्ताजी और कुफ़्र से,नाफ़र्मानी,मुख़ालिफ़त/ शत्रुता और निफ़ाख़/बिगाड से,बुरी शोहरत/चर्चा और दिखावे से और मै तेरी शरण माँगता हूँ बेहरेपन,गुंगेपन और पागलपन से कोड़ह,बर्स और तमाम बुरी बिमारियों से।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रात भर की सुरक्षा के लिए:

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ
رُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ
الْمَصِيْرُ ۝ لاَ يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ
رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَ اعْفُ عَنَّا ۗ وَ اغْفِرْ لَنَا ۗ
وَ ارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

रसूल इस किताब पर ईमान लाए जो उन के ईश्वर की तरफ़ से उन पर उतारी गई,और इस क़ुरआन को जिन्होंने मान लिया वह ईमान वाले बन गए,और सब के सब ईमान लाए अल्लाह और उस के फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ,हम अल्लाह के रसूलों में स किसी एक मे भी फ़र्क नहीं करते और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह हम ने सुना लिया और क़ुबूल भी कर लिया हम तेरी क्षमा के तलब्गार हैं और हम को तेरे ही तरफ़ पलठ कर आना है!

अल्लाह किसी को उसकी ताकत से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता,जो काम ठीक करेगा तो उसका बदला उस को मिल जायेगा,और जो बुराई लाद कर आवेगा तो उस का वबाल उसी पर पडेगा,ऐ हमारे रब अगर हम भूल जायें या ख़ता कर जायें तो हमारी पकड़ न करना, और ऐ हमारे पालनहार हम पर वह बोझ मत डाल जो तू ने हम से पहले लोगों पर ड़ाला था,ऐ हमारे प्रभु हम को वह बोझ भी उठाने मत लगा जिसकी ताकत हम मे न हो,हम को क्षमा करदे हमारे पापों को बख़्श दे,और हम पर दया कर तूही हमारे काम बनाने वाला है इन्कारी क़ौम के मुकाबले मे तू हमारी मदद करना।

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

दुश्मन (शत्रु) के शर (बुराई) से हिफ़ाज़त (सुरक्षा) के लिए

١. اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْهِمْ بِمَا شِئْتَ

१.ऐ अल्लाह! मुझे उन (दुश्मन) के मुक़ाबले में काफ़ी हो जा जिस चीज़ के साथ भी तू चाहे ।

٢.اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِىْ نُحُوْرِهِمْ وَ نَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

२.ऐ अल्लाह! बेशक हम तुझ को उन के मुक़ाबले में रखते हैं और उन के शर से तेरी पनाह /शरण माँगते हैं ।

٣. اِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّىْ وَ رَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّاْيُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ

३.बेशक! मैं अपने और तुमहारे रब की शरण/पनाह ले चुका हूँ हर उस अहंकारी से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं लाता ।

٤.اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، كُنْ لِّىْ جَارًا مِنْ فُلاَ نِ بْنِ فُلاَنٍ وَّ اَحْزَابِهٖ مِنْ خَلاَئِقِكَ، اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيَّ اَحَدٌ مِّنْهُمْ اَوْ يَطْغٰى، عَزَّجَارُكَ وَ جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ

४.ऐ अल्लाह! सातों आसमानों और विशाल अर्श/सिहांसन के रब! मेरे लिए फ़लाँ जो पुत्र है फ़लाँ का उस से पनाह/शरण बन जा और तेरी मख़लूक / जीवों में से जो उसके गिरोह हैं उन से भी के उन में से कोई एक भी मुझ पर ज़्यादती व सरकशी /विद्रोह करे,तेरी पनाह/शरण बहुत मज़बूत है और तेरी प्रशंसा बड़ी गौरव वाली है और तेरे अतिरिक्त कोई मअबूद नहीं है ।

© ABDUL INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

٩. اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَعَزُّ مِنْ خَلْقِهٖ مِنْ جَمِيْعًا، اَللّٰهُ اَعَزُّ مِمَّا اَخَافُ وَ اَحْذَرُ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ اَنْ يَّقَعْنَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ، مِنْ شَرِّعَبْدِكَ فُلَانٍ وَّ جُنُوْدِهٖ وَ اَتْبَاعِهٖ وَ اَشْيَاعِهٖ مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ، اَللّٰهُمَّ كُنْ لِّيْ جَارًا مِنْ شَرِّهِمْ، جَلَّ ثَنَآؤُكَ وَ عَزَّ جَارُكَ وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَ لَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

९.अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह अपनी सारी मख़लूक पर ग़ालिब/ हावी है, अल्लाह उन चीज़ों से बहुत ज़्यादा शक्तिशाली / ताकत वाला है जिन से मैं भय/ खौफ़ खाता हूँ और डरता हूँ और मैं अल्लाह की पनाह / शरण में आता हूँ जिस के सिवा कोई मअबूद नहीं , सातों आसमानों को थामने वाला कि वह धरती पर न गिर जाऐं मगर उस की अनुमति / इजाज़त से, तेरे फ़लाँ बंदे के शर/बुराई से और उस के लशकरों / सेना, उस के पैरोकारों / अनुयायी और जिनों व इँसानों में से उस के साथीयों के (शर से भी), ऐ अल्लाह! उन के शर से मेरे लिए पनाह /शरण बनजा, तेरी प्रशंसा बहुत शान वाली है और तेरी पनाह बहुत मज़बूत है, और तेरा नाम बरकतों वाला है और तेरी सिवा कोई मअबूद नहीं ।

- فُلَانٍ.......مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلَان....... **के बजाय दुश्मन का नाम लिया जाए ।**

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सोते मे घबराहठ के समय

*नींद मे डर और घबराहठ हो तो पढ़ें-

१.اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَ عِقَابِهِ وَ شَرِّ عِبَادِهِ وَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ

१.मैं अल्लह के शब्दों के साथ उस के अज़ाब और बन्दों के शर से उसकी शरण चाहता हूँ और शैतानौं के वसवसों/बुरे ख़यालात से और इस से के वह मेरे पास आएँ।

२.اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِىْ لَا يُجَاوِزُ هُنَّ بَرٌّ وَ لَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَ مِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ مِنْ كُلِّ طَارِقٍ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمَانُ

२.मै अल्लह तआला के उन शब्दों के साथ उसकी शरण चाहता हूँ जिन के आगे न तो कोइ नेक ना ही बुरा आदमी बढ़ सकता है, हर उस चीज़ के शर से जो आकाश से उतरती है और जो इस मे चड़ती है और रात और दिन के फ़ित्नो के शर से और हर हादसे के शर से सिवाए उस हादसे के जो भलाई के लिए हो,ऐ कृपा/दया करने वाले !

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

बुरा सपना देखने पर

बुरा सपना देखने पर पेहलू बदल लें | १

बुरा सपना देखें तो बाऐं तरफ़ थूत्कार दें और यह पढ़ें - २

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَ شَرِّهَا

मैं शैतान और इस(सपने) के शर से अल्लाह ताला की शरण चाहता हूँ!

वसवसों(बुरे ख़यालात) से निजात (पीछा छुड़ाने) के लिए

अल्लाह तआला फ़रमाता है!

وَ اِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللهِ اِنَّهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ *١

और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से कोई वसवसा महसूस हो तो अल्लाह की शरण माँग लिया करो, नि:संदेह वह सुन्ने वाला जान्ने वाला है।

नबी(ﷺ)ने फ़रमाया:

اِنَّ اللهَ تَجَاوَزَ لِاُمَّتِی عَمَّا وَسْوَسَتْ اَوْ حَدَّثَتْ بِهِ اَنْفُسُهَا مَا لَمْ تَعْمَلْ بِهِ اَوْ تَكَلَّمْ*٢

अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत की उन ग़लतियों को क्षमा किया जिन का सिर्फ़ दिल मे ख़याल आया हो या दिल मे इस के करने की तमन्ना पैदा हो परंतू ना वैसे किया हो और ना उस की बात की हो।

*नमाज़ और क़िरआत के समय वसवसे आए तो तीन बार اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ पढ़ कर बाऐं तरफ़ थुतकार दें।

*मुवज़्ज़ततैन (इख़्लास,नास,फ़लक़) पढ़ें ।

١. رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيٰطِيْنِ ۝ وَ اَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ۝

१.ऐ मेरे रब! मै शैतानौं के वसवसों से तेरी शरण चाहता हूँ और ऐ मेरे रब! मै तेरी शरण चाहता हूँ के वह मेरे पास आऐं।

٢.اَعُوْذُ بِاللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ هَمْزِهِ وَ نَفْخِهِ وَ نَفْثِهِ (३ बार)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

२.मै अल्लाह सुनने वाले और जानने वाले की शरण लेता हूँ शैतान से,इस के बेह्कावे, उस से फूँक और उसके वसवसों से।

٣.هُوَ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ الظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ

३.वही प्रथम भी है और वही आख़िर भी,ज़ाहिर भी है छिपा भी,और वह हर चीज़ का इल्म रखता है।

۴.اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ رَدَّ كَیْدَهٗ اِلَی الْوَسْوَسَةِ

४.अल्लाह सब से बड़ा है,अल्लाह सब से बड़ा है,अल्लाह सब से बड़ा है सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिस ने उस (शैतान) की चाल को वसवसे तक थाम रखा(यानी उसे यक़ीन और अमल का हिस्सा नहीं बनने दिया)।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नज़र लगने पर

*जिसकी नज़र लगी हो वह वज़ू या स्नान करे फिर वह पानी को स्नान करने के लिए दे यह नज़र लगने का मस्नून इलाज है !

रसूल ﷺ ने फ़रमाया!الْعَيْنُ حَقٌّ وَ لَوْ كَانَ شَىْءٌ سَابَقَ الْقَدَرَ سَبَقَتْهُ الْعَيْنُ وَ اِذَا اسْتُغْسِلْتُمْ فَاغْسِلُوْا

*नज़र लगना हक़ है और अगर कोई चीज़ तक़दीर से आगे बढ़ सकती तो नज़र बढ़ जाती और जब तुम से स्नान करने को कहा जाए तो स्नान करो!

*सूरह फ़ातिहा मुवज़्ज़ततैन (इख़्लास,नास,फ़लक़) पढ़ें !

١.اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّ هَامَّةٍ وَّ مِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ

१.मै हर शैतान मोज़ी/ज़ेहरीले जानदारऔर हर नज़र बद से अल्लाह के कामिल और पुर असर कलिमात के ज़रिए शरण/पनाह माँगता हूँ!

٢.بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ يُّؤْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ اَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ،
اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ ، بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ

२.मै अल्लाह के नाम से आपको झाड़ता हूँ हर उस चीज़ से जो आपको तकलीफ़ दे और हर नफ़स और हासिद कि नज़र के शर से अल्लाह आपको शिफ़ा दे,मै अल्लाह के नाम से आपको झाड़ता हूँ!

٣.بِسْمِ اللّٰهِ يُبْرِيْكَ وَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يَشْفِيْكَ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ وَ شَرِّ كُلِّ ذِىْ عَيْنٍ

३.अल्लाह के नाम के साथ,वह आपको सेहत दे,और हर बिमारी से शिफ़ा दे और हासिद के शर से जब वह हसद करे और हर नज़र(बुरी)वाले के शर से (मेहफ़ूज़ रखे)!

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

जादू, जिन्नात और शैतानों के शर /बुराई से सुरक्षा के लिए

.जादू के प्रभाव से बचने के लिए सुबह ख़ाली पेट सात(७)अजवा खजूरें खायें ।*1

.पाबंदी के साथ सुबह व शाम के अज़कार और सुरक्षा की दुआएँ पढ़ें ।

.सुबह व शाम और सोने से पहले आयतल कुर्सी पढ़ें ।

.सुरह अन्नास;सुरह फ़लक़;सुरह इखलास: मुअव्विज़ात (الإخلاص، الفلق، الناس) पढ़ें। *

.سورة البقرة (सुरह बक़रा) कि अंतिम दो आयतें हर रोज़ रात को घर में पढ़ें।*४

.शैतानों से सुरक्षा / बचाव के लिए घर में سورة البقرة कि तिलावत करना । *५

.رقية شرعيه (रुक़या शरईया) खुद पढ़ें या किसी क़ारी पाठक कि आवाज़ में बार बार बीमार को सुनवाएँ । *६

.गुस्से के समय

१. اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

१.शैतान मरदूद से अल्लाह कि पनाह/शरण चाहता हूँ ।

.शौचाल्य जाते समय

२. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَ الْخَبَائِثِ

२.ऐ अल्लाह बेशक!मैं अपवित्र जिन्नों और जिन्नियों से तेरी पनाह/शरण चाहता हूँ!

. घर से निकलते समय

३. بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ

३.अल्लाह के नाम से मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया,बुराई से बचने की शक्ति /ताक़त और नेकी करने कि शक्ति /ताक़त अल्लाह कि मदद के सिवा नहीं है ।

.मुबाशरत/सहवास के समय

४.بِسْمِ اللهِ، اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَ جَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا

४.अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह! शैतान को हम से दूर रख और शैतान को दूर रख इस (औलाद) से भी जो तू हमें प्रादान /अता करे ।

.अन्य दुआएँ

५.اَعُوْذُ بِاللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ هَمْزِهٖ وَ نَفْخِهٖ وَ نَفْثِهٖ

५.मैं अल्लाह, सुनने वाले और जानने वाले कि पनाह/शरण लेता हूँ शैतान मरदूद अस्विक्रत से,उसकी उकसाहट,उसकी फूँक और उसके फ़ुस्फ़ुसाने/वस्वसे से ।

६.اَعُوْذُ بِاللهِ العَظِيْمِ بِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَ سُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

६.मै पनाह/शरण लेता हूँ अल्लाह की जो बहुत महान है साथ उसकी ज़ात के जो बहुत क्रपालू है और उसके प्राचीन अधिकार की शैतान मरदूद/अस्विक्रत से!

७.لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

७.अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक,नहीं उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए तारीफ़/प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर कुदरत ताक़त रखने वाला है!

बिमारियों /रोगों के उपचार की प्रार्थनाएँ

*तिलावते क़ुरान बदन और आत्मा की बीमारियों के लिए शिफ़ा/चिकित्सा है।

وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ... ۝ 1*

और हम क़ुरआन मे वह चीज़ उतारते हैं जो मोमिनों के लिए शिफ़ा/चिकित्सा और रहमत है !

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ 2*

ए लोगों! निसंदेह! तुमहारे रब की तरफ़ से तुमहारे पास नसीहत आगई है और वह दिलों की बिमरियों के लिए शिफ़ा है और ईमान वालों के लिए हिदायत/मार्गदर्शक और रहमत है !

***बिमारी और पीड़ा की सूरत मे अन गिनत बार सुरह फ़ातिहा पढ़ कर बिमार पर फ़ूँके !**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۝ اِهْدِنَاالصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ۝

१.सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का पालने वाला है। बहुत क्रपाशील और अत्यंत दयावान है।बद्ले के दिन का मालिक है। हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मदद चाहते हैं। हमें सीधी राह दिखा। उन लोगों की राह जिन पर तू ने इनआम किया, उन लोगों की नहीं जिन पर गज़ब/सख्त गुस्सा किया गया और ना गुमराहों की।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

٢ .اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ

२.मुझे बिमारी लगी है और तू सब महरबानों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

.अपना हाथ दर्द वाली जगह पर रख कर पढ़ो!

३. بِسْمِ اللّٰهِ (३बार)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَ قُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَ اُحَاذِرُ (७बार)

अल्लाह के नाम के साथ-मै अल्लाह तआला और उसकी क़ुदरत की पनाह/आश्रय चाहता हूँ,उस चीज़ के शर से जिस को मै पाता हूँ और जिस से मै डरता हूँ।

*अपने लिए प्रार्थना करते हुए اَنْ يَشْفِيَكَ की बजाए اَنْ يَشْفِيَنِي पढ़ें !

٤.اَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ

४.मै बड़ाई वाले अल्लाह से,अर्श-ए-अज़ीम/महा-सिंहासन के रब से सवाल करता हूँ के वह तुझे शिफ़ा दे !

* बिमार पर दायाँ हाथ फ़ेरते हुए पढ़े-ख़ुद को भी फ़ूँक सकते हैं।

٥.اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا

५.अए लोगों के रब! कष्ट दूर कर दे और चिकित्सा/शिफ़ा दे, तू ही शिफ़ा देने वाला, तेरी शिफ़ा के सिवा कोई शिफ़ा नहीं-एसी शिफ़ा जो मेरे रोग को बाक़ी ना छोड़े!

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रोगी की मिज़ाज पुर्सी

रसूल अल्लाह(ﷺ)ने फ़रमाया:

اَطْعِمُوا الْجَآئِعَ وَ عُوْدُوا الْمَرِيْضَ وَ فُكُّوا الْعَانِىَ १ *

*भूके को खाना खिलाओ, और रोगी की मिज़ाज पुर्सी करो, और क़ैदी को छुड़ाओ |

* नबी करीम (ﷺ) ने फ़रमाया: जब कोई मुसलमान भाई की मिज़ाज पुर्सी के लिए जाता है तो वह बैठने तक जन्नत के फ़लों मे चलता है।जब वह बैठ जाता है तो रहमत उसे ढाँप लेती है। अगर सुबह का समय हो तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिशते उस के लिए प्रार्थना करते रहते हैं और अगर शाम का समय हो तो सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिशते उस के लिए प्रार्थना करते रहते हैं । २*

*नबी करीम (ﷺ) ने फ़रमाया: क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमाएगा-अए इब्ने आदम! मै बीमार हुआ तू ने मेरी मिज़ाज पुर्सी कयों नहीं की? वह कहेगा अए मेरे रब! मै तेरी मिज़ाज पुर्सी कैसे करता तू तो संसार का रब-उल-आलमीन है- अल्लाह तआला फ़रमाएगा: क्या तुझे मालूम ना था के मेरा फ़ुलाँ बन्दा बिमार है?लेकिन तू ने उसकी मिज़ाज पुर्सी नहीं की क्या तुझे मालूम न था अगर तू उस रोगी की मिज़ाज पुर्सी करता तो मुझे उसके पास पाता-*३

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

१.اَللّٰهُمَّ اشْفِهِ या اَللّٰهُمَّ عَافِهِ

१.अए अल्लाह इस को अफ़ियत दे या अए अल्लाह! इस को शिफ़ा/चिकित्सा दे !

२.لَا بَاْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ

२.कोई हरज नहीं,अल्लाह ने चाहा तो (यह रोग,पापों से)पाक/शुद्ध करने वाली है !

*** रोग से दूरी के लिए**

٣.اَسْاَلُ اللهِ الْعَظِيْمَ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَشْفِيَكَ

३.मै बड़ाई वाले अल्लाह से,अर्श-ए-अज़ीम के रब से सवाल करता हूँ के वह तुझे शिफ़ा/चिकित्सा दे ।

***बिमार पर दायाँ हाथ फ़ेरते हुए पढ़े- ख़ुद को भी फ़ूँक सकते हैं।**

٤.اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِىْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاؤُكَ

شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا

४.अए लोगों के रब! कष्ट को दूर दे, कर और शिफ़ा दे, तू ही शिफ़ा देने वाला, तेरी शिफ़ा के सिवा कोई शिफ़ा नहीं, एसी शिफ़ा जो मेरे रोग को बाक़ी ना छोड़ें ।

मुसीबत ज़दा और बीमार को देख कर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ وَ فَضَّلَنِىْ عَلَى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا

सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने मुझे उस से आफ़ीयत दी जिसमें तुझे मुब्तिला/पीड़ित किया और मुझे अपनी बहुत सी मख़लूक़ पर फ़ज़ीलत अता की!

मुसीबत और ग़म कि ख़बर सुनने पर

اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ، اَللّٰهُمَّ اُجُرْنِىْ فِىْ مُصِيْبَتِىْ وَ اَخْلِفْ لِىْ خَيْرًا مِّنْهَا

बेशक!हम सब अल्लाह के लिए हैं और हम सब अल्लाह कि तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं,ए अल्लाह!मुझे मेरी मसीबत के इवज़/ बदले अज्र दे और मुझे उस से बेहतर अता फ़रमा !

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मय्यत की क्षमा के लिए प्रार्थनाएँ

१.اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ وَ ابْنُ اَمَتِكَ، اِحْتَاجَ اِلَى رَحْمَتِكَ وَ اَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهٖ اِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِيْ اِحْسَانِهٖ وَ اِنْ كَانَ مُسِيْئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ

१.ए अल्लाह ! यह तेरा बन्दा और तेरी बन्दी का बेटा,तेरी रहमत/कृपा का मोह्ताज है और तू इस के अज़ाब से बेपरवाह है। अगर यह नेक था तो इस की नेकीयों को ज़्यादा कर और अगर यह बुरा था तो इसे माफ़ कर दे ।

२.اَللّٰهُمَّ اِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ فِيْ ذِمَّتِكَ وَ حَبْلِ جِوَارِكَ فَقِهٖ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَ عَذَابِ النَّارِ وَ اَنْتَ اَهْلُ الْوَفَاءِ وَ الْحَقِّ اَللّٰهُمَّ فَاغْفِرْ لَهُ وَ ارْحَمْهُ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

२.अए अल्लाह! निसंदेह फुलांन इब्न फुलांन तेरे ज़िम्मे और तेरी पनाह में है। तो उसे क़बर की कठिनाइयों और आग के अज़ाब से बचा और तू वफ़ा और हक़ के क़ाबिल है।अए अल्लाह बस इसे क्षमा कर और इस पर कृपा कर बेशक तू ही क्षमा करने वाला और अत्यन्त दयावान है।

३.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَ مَيِّتِنَا وَ شَاهِدِنَا وَ غَائِبِنَا وَ صَغِيْرِنَا وَ كَبِيْرِنَا وَ ذَكَرِنَا وَ اُنْثَانَا، اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَ مَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْاِيْمَانِ

३.ए अल्लाह! हमारे ज़िन्दा-मुरदा,हाज़िर-ग़ायब,छोटे-बडे, मर्दों और औरतों को क्षमा करदे।ए अल्लाह! हम मे से जिस को तू जीवित रखे बस उसको इस्लाम पर जीवित रख और जिस को तू मृत्यु दे तो उसको ईमान पर मृत्यु देना !

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

۴.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِهُ وَ ارْحَمْهُ وَ اعْفُ عَنْهُ وَ اَكْرِمْ نُزُلَهُ وَ وَسِّعْ مُدْخَلَهُ وَ اغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَ الثَّلْجِ وَ الْبَرَدِ وَ نَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَ اَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ وَ اَهْلًا خَيْرًا مِنْ اَهْلِهِ وَ زَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ وَ اَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَاَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ

४.ए अल्लाह! इसको क्षमा कर और इस पर कृपा कर और इसके पापों को अन्देखा कर के उसे माफ़ कर दे. और इस की अच्छी महमानी कर और इस के दाख़िल होने के स्थान को चौड़ा करदे और उसे पानी,बर्फ़ और ओलों से धो ड़ाल और उसे गल्तियों से इस तरह साफ़ करदे जैसे सफ़ेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है और उसे उसके इस घर से बहुत अच्छा घर और इस के घर वालों से बहुत अच्छे घर वाले और इस साथी से बहुत अच्छा साथी दे और उसे स्वर्ग में दाख़िल कर दे और उसे अज़ाब-ए-क़बर और आग के अज़ाब से बचाले।

बच्चे की मय्यत लिए प्रार्थना

۱.اَللّٰهُمَّ اَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

१.ए अल्लाह! इस को क़बर के अज़ाब से बचा।

۲. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا سَلَفًا وَ فَرَطًا وَ اَجْرًا

२.ए अल्लाह! इसे हमारे लिए पहले जा कर मेहमानी तैयार करने वाला-आगे चलने वाला और ईनाम दिलाने वाला बनादे।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

गुनाहों की बख़शिश के लिए

इस्तिगफ़ारात

- अपने गुनाहों की क्षमा माँगने और ख़ूब इस्तिगफ़ार करने से ख़ैर और भलाई के दरवाज़े खुलते हैं । अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُم اِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا o يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا o وَّ يُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَ بَنِيْنَ
وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّ يَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا *١

तो मैं (नूह) ने कहा : अपने रब से क्षमा माँगो निश्चय है वह बड़ा क्षमाशील है। वह तुम पर आसमान को ख़ूब बरसाता हुआ भेजेगा और वह माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा, और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा और तुम्हारे लिए नेहरें प्रावाहि करेगा!

रसूल अल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया :

مَنْ اَكْثَرَ مِنْ اَلاِسْتِغْفَارِ جَعَلَ اللّٰهُ لَهُ مِنْ كُلِّ هَمٍّ فَرَجاً وَ مِنْ كُلِّ ضَيْقٍ مَخْرَجاً وَ رَزَقَهُ مِنْ
حَيْثُ لاَ يَحْتَسِبُ * ٢

जो खूब इस्तिगफ़ार करता है अल्लाह तआला उस के लिए हर दुख और तंगी से निकलने का रासता बना देता है और उस को वहाँ से रिज़्क़ देता है जहाँ से वह कल्पना भी नहीं कर सकता ।

हर नामाज़ के बाद ३ बार

१.मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ — ١.اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

रुकुअ और सजदे में

٢.سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَ بِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ

२.पाक है तू ऐ अल्लाह, ऐ हमारे रब! और हर प्रकार की तारीफ़ तेरे ही लिए है ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे या माफ़ कर दे।

सजदे में

٣. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِى ذَنْبِىْ كُلَّهُ دِقَّهُ وَجِلَّهُ وَ اَوَّلَهُ وَ آخِرَهُ وَ عَلاَنِيَتَهُ وَ سِرَّهُ

३.ऐ अल्लाह! मेरे थोड़े और ज़्यादा, अगले और पिछले,और स्पष्ट/ज़ाहिर और पोशीदा /छुपे हुए सब गुनाह बख़्श दे या माफ़ कर दे ।

नामाज़ के(आख़री) अंतिम तशहहूद में

٤.اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِى مَغْفِرَةً عِنْدِكَ وَ ارْحَمْنِىْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

४.ऐ अल्लाह! बेशक मैं ने अपनी जान पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म किया और तेरे सिवा कोई अन्य गुनाहों को क्षमा नहीं कर सकता ।इस लिए मुझे माफ़ कर दे ।बख़्शीश/ माफ़ी अपनी तरफ़ से, और मुझ पर रहम दया कर, नि:सन्देह तू बहुत माफ़ करने वाला है बहुत आधिक रहम/दया करने वाला है ।

मज्लिस / बैठक के समाप्ति पर परिशुद्धि के लिए:

٥.سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ، اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ عَمِلْتُ سُوْءًا وَ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ، فَاغْفِرْ لِىْ، فَاِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبِ اِلَّا اَنْتَ

५ .पाक है तू ऐ अल्लाह! और तेरे लिए हर प्रकार कि तारीफ़ है । मैं गवाही देता हूँ के तेरे सिवा कोई इबाद्त के लायक़ नहीं, मैं क्षमा चाहता हूँ तुझ से और तुझ से तौबा करता हूँ । मैं ने बुरे कर्म किए और मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, इस लिए मुझे बख़्श दे/माफ़ कर दे ,बेशक तेरे सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श/माफ़ कर सकता ।

और दूसरे इस्तिगफ़ारात

٦.سُبْحَانَكَ وَ بِحَمْدِكَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيكَ

६.पाक है तू और तेरी ही तारीफ़/प्रशंसा है, मैं तुझ से क्षमा चाहता हूँ और मैं तुझ से तौबा करता हूँ ।

٧.رَبِّ اغْفِرْلِىْ وَ تُبْ عَلَىَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْم

७.ऐ मेरे रब !मुझे बख़्श/ माफ़ कर दे और मुझ पर दयालू परोपकारी हो जा, बेशक तू ही बहुत तौबा स्वीकार करने वाला, बहुत आधिक रहम/दया करने वाला है!

٨. اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِى لاَ اِلٰهَ اِلاَّ هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَيْهِ

८.मैं क्षमा चाहता हूँ अल्लाह से जिस के सिवा कोई इबाद्त के लायक़ नहीं,जीवित, प्रतिष्ठित स्थापित रेहने वाला है और मैं उस की तरफ़ तौबा करता हूँ ।

٩ .اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ ذَنْبِى وَ وَسِّعْ لِىْ فِىْ دَارِىْ وَ بَارِكْ لِىْ فِىْ رِزْقِىْ

९.ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह (बख़्श) माफ़ कर दे, मेरे घर में विस्तार (वुस्अत) कर और मेरे रिज़्क़ में बरकत कर ।

١٠ .اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ ذَنْبِى وَ اَخْسَأْ شَيْطَانِىْ وَ فُكَّ رِهَانِىْ وَ ثَقِّلْ مِيْزَانِىْ وَاجْعَلْنِىْ فِىْ النَّدِىِّ الاَعْلٰى

१०.ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श/माफ़ कर दे, मेरे शैतान को भगा दे, मेरी जान को (आग से) आज़ाद कर दे, मेरे मीज़ान/ तराज़ू को भारी कर दे और मुझे उच्च मज्लिस बरकत वालों में शामिल कर दे ।

११.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ خَطِيْئَتِىْ وَ جَهْلِىْ وَ اِسْرَافِىْ فِىْ اَمْرِىْ وَ مَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّىْ،
اللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ هَزْلِىْ وَ جِدِّىْ وّ خَطَئِىْ وَ عَمْدِىْ وَ كُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِىْ

११.ऐ अल्लाह! माफ़ कर दे मेरा दोष, मेरी जहालत, मेरे काम में मेरी ज़्यादती और वह जिस के बारे में तू मुझ से ज़्यादा जानता है, ऐ अल्लाह! हँसी मज़ाक में, गंभीरता में, भूल कर और जान बूझकर किए हुए मेरे गुनाह बख़्श दे और ये सब मेरे अंदर है ।

१२.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ مَا قَدَّمْتُ وَ مَا اَخَّرْتُ وَ مَا اَسْرَرْتُ وَ مَا اَعْلَنْتُ وَ مَا اَسْرَفْتُ
وَ مَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّىْ، اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَ اَنْتَ الْمُؤَخِّرُ، لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ

१२.ऐ अल्लाह! मेरे लिए बख़्श दे जो मैंन पेहले किया और जो मैंने बाद में किया, जो मैंने छुपाया और जो मैंने प्रकट किया, जो मैंने सीमा पार की और वह जो तू मुझ से ज़्यादा जानता है ।तू सब से पहला और सब से आख़री है, तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं ।

१३. اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّى، لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ، خَلَقْتَنِىْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَ اَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَ
وَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَىَّ وَ
اَبُوْءُ بِذَنْبِى فَاغْفِرْلِىْ اِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلاَّ اَنْتَ

१३.ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तू ने मुझे जन्म अस्तित्व दिया और मैं तेरा दास ग़ुलाम हूँ और मैं अपनी क्षमता के अनुसार तुझ से किए हुए प्रण और वादे पर प्रतिष्ठित या स्थापित हूँ, मैं तेरी पनाह /शरण

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

चाहता हूँ हर बुराई से जो मैंने की, मैं अपने ऊपर तेरी आदान प्रदान किये हुए नेअमतो /वरदानो को स्वीकार करता हूँ और अपने गुनाहों/ पापों को स्वीकार करता हूँ, इस लिए मुझे बख़्श/माफ़ कर दे, वास्तव में तेरे सिवा कोई गुनाहों/पापों को बख़्श/माफ़ नहीं कर सकता ।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रंज व दुख के अज़ाले (दूर करने) के लिए

١.اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّیْ وَ حُزْنِیْٓ اِلَی اللّٰهِ

१.बेशक मैं अपनी बेक़रारी और दुख का शिकवा अल्लाह ही से करता हूँ।

٢.اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّیْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

२.अल्लाह, अल्लाह ही मेरा रब है, मैं उस के साथ किसी को शरीक नहीं करता।

٣.لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

३.तेरे सिवा कोई मअबूद/खुदा नहीं, पाक है तू,बेशक मैं ही ज़ालिमों में से हूँ ।

٤.اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا وَّ اَنْتَ تَجْعَلُ الحَزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ

४.ऐ अल्लाह! कोई काम आसान नहीं मगर जिसे तू आसान करदे और तू चाहता है तो मुश्किल को आसान कर देता है ।

٥.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَ الحَزَنِ وَ الْعَجْزِ وَ الْكَسَلِ وَ الْجُبْنِ وَ الْبُخْلِ
وَ ضَلَعِ الدَّيْنِ وَ غَلَبَةِ الرِّجَالِ

५.ऐ अल्लाह! मैं आप कि पनाह/शरण चाहता हूँ चिंता व दुख से और कमज़ोरी व सुस्ती से और बुज़दिली/कायरता से और कर्ज़/उधार के बोझ और लोगों के कठोर ग़लबे से ।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

٤.اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْ فَلَا تَكِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَیْنٍ وَّ اَصْلِحْ لِیْ شَاْنِیْ كُلَّهٗ
لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

६.ऐ अल्लाह! मैं तेरी रहमत/क्रपा का उम्मीदवार हूँ इसलिए एक पल के लिए भी मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर और मेरे सब हालात सँवार दे और तेरे सिवा कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं।

٧.لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِیْمُ الْحَلِیْمُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ
السَّمٰوٰتِ وَ رَبُّ الْاَرْضِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِیْمُ

७.अल्लाह के सिवा कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं, जो बहुत बड़ा बहुत सहनशील है,अल्लाह के सिवा कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं जो महान अर्श का रब है,अल्लाह के सिवा कोई मअबूद/खुदा नहीं, जो आसमानों और ज़मीन का रब है और अर्श-ए-करीम का रब है।

٨.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ، ابْنُ عَبْدِكَ، ابْنُ اَمَتِكَ، نَاصِیَتِیْ بِیَدِكَ، مَاضٍ فِیَّ حُكْمُكَ،
عَدْلٌ فِیَّ قَضَاؤُكَ، اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَلَكَ، سَمَّیْتَ بِهٖ نَفْسَكَ اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا
مِّنْ خَلْقِكَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِیْ كِتَابِكَ اَ وِ سْتَاْثَرْتَ بِهٖ فِیْ عِلْمِ الْغَیْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ
الْقُرْاٰنَ رَبِیْعَ قَلْبِیْ وَ نُوْرَ صَدْرِیْ وَ جَلَاءَ حُزْنِیْ وَ ذَهَابَ هَمِّیْ

८.ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरा बंदा/दास और तेरे बंदे का बेटा और तेरी बंदी का बेटा हूँ, मेरा माथा तेरे नियंत्रण में है, मेरे हक/पक्ष में तेरा आदेश जारी है, तेरा फ़ैसला/निर्णय मेरे बारे में इंसाफ़/ न्याय पर निभर्र/मबनी है, मैं सवाल करता हूँ तेरे हर उस नाम के साथ जो तूने अपने लिए रखा या तूने अपनी मख़लूक़/जगत में से किसी को सिखाया या तूने अपनी किताब में उतारा या तूने उसे अपने पास इल्मे ग़ैब में रखने को तरजीह/अधिमान दी के तू क़ुरआन को मेरे दिल की बहार और

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सिने का नूर और मेरे दुख को दूर करने वाला और मेरी चिंता को ले जाने वाला बना दे ।

⁕ दुखों कि दूरी और गुनाहों कि क्षमा के लिए नबी (ﷺ) पर खुब दरुद भेजें ।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

स्वीकारित प्रार्थना / मक़बूल दुआऐं

निचे लिखे हुए अज़कार के साथ जो दुआ करे / प्रार्थना माँगी जाए वह स्वीकार / कुबूल होती है ।

١. سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ

१.अल्लाह पाक है, संपूर्ण प्रशंसा/हर प्रकार की तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है,अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं है और अल्लाह सब से बड़ा है!

٢. لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

२.तेरे सिवा कोई मअबूद/खुदा नहीं, पाक है तू,बेशक मैं ही ज़ालिमों में से हूँ ।

٣.يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

३.ऐ ज़िन्दा और क़ायम रहने वाले! मैं तेरी रहमत के साथ मदद माँगता हूँ!

٤. يَابَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

४.ऐ आसमानों को नए सिरे से बानाने वाले! ऐ ज़िन्दा रहने वाले! ऐ क़ायम रखने वाले! बेशक मैं आप से सवाल करता हूँ ।

٥. اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَ اَنْتَ تَهْدِيْنِيْ وَ اَنْتَ تُطْعِمُنِيْ وَ اَنْتَ تَسْقِيْنِيْ وَ اَنْتَ تُمِيْتُنِيْ وَ اَنْتَ تُحْيِيْنِيْ

५.ऐ अल्लाह! तू ने मुझे पैदा किया और तू मुझे हिदायत देता है और तू ही मुझे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

खिलाता है और मुझे पिलाता है और तू ही मुझे मौत देता है और तू ही मुझे जीवन/ज़िंदगी देता है !

٦.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنِّی اَشْهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِی لَمْ وَ لَمْ يُوْلَدْ وَ لَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ يَلِدْ

६.ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ क्योंकि मैं गवाही देता हूँ के बेशक तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं, तू अकेला, बेनियाज़/निर्लोभ है, जिसने न किसी को जना और न किसी से जना गया है और न ही उसका कोई समकक्ष/हमसफ़र है ।

٧.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدَ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْمَنَّانُ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ، يَاذَاالْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ يَاحَیُّ يَاقَيُّوْمُ

७.ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस कारण से के सब तारीफ़ तेरे ही लिए है,तेरे सिवा कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं, बहुत एहसान करनेवाला,आसमानों और ज़मीन को नए सिरे से बनाने वाला, ऐ बुज़ुर्गी तथा इज़्ज़त वाले, ऐ ज़िन्दा और क़ायम रखने वाले !

٨.لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ تَبَارَكَ اللّٰهُ، رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

८.अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं, बहुत बुर्दबार बहुत इज़्ज़त वाला है, अल्लाह पाक है और बहुत बरकतों वाला है, महान राजासन का स्वामी है और प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार क रब है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

٩.لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبُّ الْاَرْضِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ

९.अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं, जो बहुत बड़ा बहुत बुर्दबार है,अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं जो महान राजासन का स्वामी है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं जो आसमानों तथा ज़मीन का रब है और अर्श-ए-करीम/ महिमाशाली सिंहासन का रब है ।

١٠.لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ

१०.अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं, वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, उसी के लिए हर प्रकार की प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।सारी प्रशसा अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह तआला हर दोष से पाक है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअबूद/ख़ुदा नहीं, अल्लाह तआला बहुत बड़ा है और अल्लाह की तौफ़ीक/उत्साह के बिना गुनाह छोड़ने की ताक़त और नेकी/अच्छे कर्म करन की ताक़त नहीं है।ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे।

١١.يَاوَدُوْدُ، يَا ذَاالْعَرْشِ الْمَجِيْدِ، يَا فَعَّالُ لِّمَا تُرِيْدُ، اَسْئَلُكَ بِعِزِّكَ الَّذِىْ لَا يُرَامُ وَ بِمُلْكِكَ الَّذِىْ لَا يُضَامُ وَ بِنُوْرِكَ الَّذِىْ مَلَأَ اَرْكَانَ عَرْشِكَ اَنْ تَكْفِيَنِىْ شَرَّ كَذَا وَ كَذَا يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ، يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ، يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ

११ .ऐ बहुत प्रेम करनेवाला! ऐ शानदार अर्श/सिंहासन के मालिक!बड़े गौरवशाली! ऐ जो चाहे उसे कर डालने वाले! मैं तुझ से सवाल करता हूँ । तेरी इज़्ज़त का वासता

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

दे कर जिसे कोई छेड़ नहीं सकता, तेरी मिल्क्यत/स्वामित्र का वास्ता दे कर जिस मैं कोई मज़ाहम/ दख़ल अंदाज़ नहीं हो सकता और तेरे नूर का वास्ता दे कर जिस से तेरे अर्श/ सिंहासन का चारों ओर भरा हुआ है, इस शर/बुराई से मुझे बचाले । ऐ फ़रयाद रस/ सुनने वाले प्रार्थना को! मेरी मदद कर, ऐ फ़रयाद रस /सुनने वाले प्रार्थना को! मेरी मदद कर, ऐ फ़रयाद रस/सुनने वाले प्रार्थना को! मेरी मदद कर !

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

दुआ-ए-इस्तिख़ारा

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَ اَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ
الْعَظِیْمِ، فَاِنَّكَ تَقْدِرُوَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ، اَللّٰهُمَّ
اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَخَیْرٌلِیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ،
فَاقْدُرْهُ لِیْ وَ یَسِّرْهُ لِیْ،ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاِنْ كُنْتُ تَعْلَمُ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ
فِیْ دِیْنِیْ وَ مَعَاشِیْ وَ عَاقِبَةِ اَمْرِیْ، فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَ اصْرِفْهُ عَنِّیْ وَ
اصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَ اقْدُرْ لِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ

ए अल्लाह बेशक/निसंदेह! मैं तुझ से तेरे इल्म/ज्ञान के ज़रिए खैर/भलाई तलब करता हूँ और तेरी क़ुदरत/श्रमता कि माध्यम तुझ से ताक़त माँगता हूँ!और तेरे फ़ज़ले अज़ीम का तलबगार/ख़ाहिश मन्द हूँ के बेशक तू ही क़ुदरत/श्रमता रखता है और मुझे कोई क़ुदरत/श्रमता नहीं- इल्म तुझी को है और मै कुछ नहीं जानता और तू संपूर्ण पोशीदा/गुप्त बातों को जानने वाला है-ए अल्लाह!अगर तू जानता है के यह काम (जिस के लिए इस्तिख़ारा किया जा रहा है) मेरे दीन,मआश/रोज़ी और मेरे काम के अंजाम के ऐतबार/यक़ीन से मेरे लिए बेहतर है तो उसे मेरे लिए मुक़द्दर/भाग्य में कर दे और उसको मेरे लिए असान कर दे,फिर मुझे उसमे बरकत अता कर और अगर तू जानता है के यह काम मेरे दीन,मआश/रोज़ी और मेरे काम के अंजाम के ऐतबार/यक़ीन से बुरा है तो उसे मुझ से दूर कर दे और मुझे भी उससे हिटा दे,फिर मेरे लिए ख़ैर मुक़द्दर फ़रमा दे,जहाँ भी हो और उस पर मेरे दिल को मुत्मइन/संतुष्ट कर दे !

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

प्रार्थनाओं का अजर और हदीस (प्रशंसा और तस्बीह)

हज़रत फ़ज़ला बिन उबैद (र.ज़) कहते हैं के एक दिन रसूल अल्लाह (ﷺ) हमारे पास बैठे थे के एक आदमी आया (मस्जिद में),नमाज़ पढ़ी और प्रार्थना करने लगा- अए अल्लाह मुझे क्षमा कर,मुझ पर क्रिपा कर-आप (ﷺ) ने कहा: अए नमाज़ी तू ने (प्रार्थना करने में) जल्दी की-जब तुम नमाज़ पढ़लो और प्रार्थना के लिए बैठो तो अल्लाह के क़ाबिल प्रशंसा और तस्बीह करो फ़िर मुझ पर दरुद भेजो फ़िर अपने लिए प्रार्थना करो-फ़ज़ला बिन उबैद(र.ज़) कहते हैं के एक दूसरे आदमी ने नमाज़ पड़ी और (उस्के बाद) अल्लाह की प्रशंसा और तस्बीह की,नबी (ﷺ) पर दरूद भेजा तो रसूल अल्लाह (ﷺ) ने कहा:अए नमाज़ी प्रार्थना कर तरी प्रार्थना क़ुबूल होगी (तिरमेज़ी :३४७६)

१. हज़रत अबुहुरेरह(र.ज़) से रिवायत है रसूल अल्लाह (ﷺ) ने कहा:दो कलमें हैं जो ज़बान पर हल्के हैं (क़यामत के दिन) वज़न में भारी होंगे और रहमान को पसंद हैं! سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ(सही मुस्लिम:६८४६)

२.हज़रत इब्ने उमर से रिवायत है के हम रसूल अल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ते थे के हम मे से एक आदमी ने कहा; اَللهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَ سُبْحَانَ اللهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا रसूल अल्लाह (ﷺ) ने पूछा: किस ने ये कल्मे कहे ? तो एक आदमी ने बोला मै ने कहा या रसूल अल्लाह (ﷺ) तब आप (ﷺ) ने कहा मुझे आश्चर्य हुआ जब इस के लिए आकाशों के दरवाज़े खोले गए -हज़रत इब्ने उमर(र.ज़) कहते हैं जब मै ने यह बात सुनी तो कभी इन कलिमात को नहीं छोड़ा- (सही मुस्लिम:१३५८)

दरूद शरीफ़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

१ .हज़रत ज़ेद बिन खारजा(र.ज़) से रिवायत है मैं ने रसूल अल्लाह (ﷺ) से पुछा आप (ﷺ) ने कहा: मेरे ऊपर दरूद भेजो और प्रार्थना मै कोशिश करो और कहो! اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ(सुनन निसाइ :१२९३)

२. हज़रत अबु सईद ख़ुदरी ने बताया हम ने रसूल अल्लाह (ﷺ) से पुछा:अए अल्लाह के रसूल (ﷺ) आप पर सलाम तो इस तरह किया जाता है लेकिन दरूद किस तरह भेजा जाए? आप (ﷺ) ने कहा:इस तरह कहो

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰی اِبْرَاهِيْمَ وَ بَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰی اِبْرَاهِيْمَ وَ آلِ اِبْرَاهِيْمَ(सहीह बु.खारी:६३५८)

सुबह और शाम की प्रार्थनाएँ

हज़रत अन्स(र.ज़) ने बताया के रसूल अल्लाह (ﷺ)ने कहा:मुझे उन लोगों के साथ बैठना हज़्रत इस्माईल (अ.स) की संतान मे से चार गुलामों को आज़ाद करने से ज़्यादा पसंद है जो नमाज़े फ़जर से सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं- मुझे उन लोगों के साथ बैठना हज़रत इस्माईल (अ.स) की संतान मे से चार गुलामों को आज़ाद करने से ज़्यादा पसंद है जो नमाज़ अस्र से सूरज डूबने तक अल्लाह क ज़िक्र करते हैं। (सुनन अबि दाऊद:३६६७)

१.हज़रत जुवेरिया(र.ज़) ने बताया जब रसूल अल्लाह (ﷺ) फ़ज्र की नमाज़ के बाद सुबह उन के पास से निकले वह अपनी नमाज़ की जगह पर थी चाशत के समय जब आप (ﷺ) लोटे तो देखा के वह वहीं पर बैठी थी,आप(ﷺ) ने पुछा:तुम इसी हाल मे रही जब से मैं ने तुमहें छोडा? हज़रत जुवेरिया(र.ज़) ने जवाब दिया हाँ-

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

आप (ﷺ) ने कहा: तुम्हारे बाद मैं ने चार कलिमे तीन बार कहे-अगर वह इन कलिमात के साथ वज़न करे जो आज तुम ने अब तक कहे हैं तो वही भारी होंगे !

سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَ رِضَا نَفْسِهِ وَ زِنَةَ عَرْشِهِ وَ مِدَادَ كَلِمَاتِهِ

(सही मुस्लिम:६९१३)

२(१).हज़रत उक़बा बिन अमर(र.ज़) ने यह हदीस बताई के कहा करो !

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَ عَلَى آلِ مُحَمَّدٍ (सुनन अबी दाउद:९८१)

(२). हज़रत अबु दरदा(र.ज़) ने बताया के रसूल अल्लाह (ﷺ) ने कहा: जिस ने सुबह के समय और शाम के समय मुझ पर दस बार दरूद भेजा वह क़यामत के दिन मेरी शिफ़ाअत पालेगा-(सही तर्गीब तर्हीब:६५९)

३.हज़रत अबी बिन कआब(र.ज़)ने अपने बाप को कहते हुए सुना के उनके खजूरों के ढेर थे तो उन्हों ने उस मे कमी देखी-एक रात उन्हों ने चोर को पकड लिया जो जानवर के जैसा एक जवान लड़का था-उन्हों ने उसको सलाम किया तो उस ने जवाब दिया उन्हों ने कहा तुम कौन हो? जिन या इन्सान, उस ने कहा मै जिन हूँ उन्हों ने कहा अपना हाथ मेरी तरफ़ बड़ाओ तो उस ने अपना हाथ बड़ाया- उसके हाथ कुत्ते के हाथ की तरह थे उस्के बाल कुत्ते के बाल की तरह थे-उन्हों ने पूछा क्या इस तरह जिन्नों को पैदा किया जाता है?उस ने कहा मै यह जानता हूँ के जिन्नों मे मुझ से बड़ा बलवान कोई नहीं-उन्हों ने कहा तुम मेरे पास क्यों आए हो? उस ने कहा मुझे क़बर मिली है के तुम सदक़ा करना बहुत पसंद करते हो तो मैं तुमहारे खाने मे से अपना हिस्सा लेने आया हूँ-उन्हों ने कहा किया चीज़ तुम से बचा सकती है? उस ने कहा वह आयात जो सुरह बक़रा मे है

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ जो कोई इसे रात को पढ़ेगा वह सुबह तक मुझ से बचा रहेगा और जो कोई इसे सुबह को पढ़ेगा वह रात तक मुझ से बचा रहेगा-फ़िर जब उन्होंने इस बात का ज़िक्र नबी (ﷺ) से किया तो आप(ﷺ) ने कहा:इस खबीस ने सच कहा है! (अल्मजम अल्कबीर तिब्रानी,ज:१,स:२०१,हदीस:५४१)

४.हज़रत अबूहुरेरह से रिवायत है रसूल अल्लाह (ﷺ) अपने सहाबा (र.ज़) को सिखाते के जब सुबह करे तो यूँ कहे اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَ بِكَ اَمْسَيْنَا وَ بِكَ نَحْيَا وَ بِكَ نَمُوْتُ وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ और जब शाम करे तो यूँ कहे اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَ بِكَ اَصْبَحْنَا وَ بِكَ نَحْيَا وَ بِكَ نَمُوْتُ وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ (जाम तिर्मेज़ी :३३९१)

५. हज़रत इब्ने अब्बास (र.ज़) से रिवायत है रसूल अल्लाह (ﷺ)ने फ़रमाया: जो आदमी सुबह ये पढ़े اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَ لَكَ الشُّكْرُ तो उस्ने अपने इस दिन का धन्यवाद कर दिया (सही इब्ने हबान स:१४२,हदीस:८६१)

६.हज़रत अबदुरहमान बिन अब्ज़ा (र.ज़) अपने बाप से रिवायत करते है रसूल अल्लाह (ﷺ) जब सुबह करते और जब शाम करते तो पढ़ा करते!

اَصْبَحْنَا عَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ وَ عَلٰى كَلِمَةِ الْاِخْلَاصِ وَ عَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى مِلَّةِ اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (मुसनद अहमद,ज:२४,स:७९,हदीस:१५३६३)

७.हज़रत अबु राशिद हब्रानी (र.ज़) से रिवायत है के मै अब्दुल्लाह बिन आस (र.ज़) के पास आया और उन से कहा मुझे कोई हदीस बताईए जो आप ने रसूल अल्लाह (ﷺ) से सुनी हो-तो उन्हों ने मेरी तरफ़ एक लिखा हुआ कागज़ डाला और कहा के रसूल अल्लाह (ﷺ) ने मुझे यह लिखवाया था- मै ने देखा उस मे लिखा था के अबु बकर(र.ज़) ने कहा अए अल्लाह के रसूल (ﷺ) मुझे कुछ सिखाईए जो

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मै कहा करूँ जब सुबह करूँ और शाम करूँ-आप(ﷺ) ने कहा :अए अबु बकर(र.ज़) कहो

اَللّٰهُمَّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ، عَالِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَ مَلِيْكَهُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَ مِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَ اَنْ اَقْتَرِفَ وَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْءً اَوْ اَجُرَّهُ اِلٰى مُسْلِمٍ

(जाम तिर्मेज़ी :३५२९)

८.हज़रत अनस (र.ज़) ने बताया के रसूल अल्लाह (ﷺ) ने कहा: जो आदमी सुबह के समय कह ले اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَ مَلٰٓئِكَتِكَ وَ جَمِيْعَ خَلْقِكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَ رَسُوْلُكَ तो वह उस दिन मे जो पाप भी करेगा अल्लाह तआला उसे क्षमा करदेगा-अगर शाम को केहले तो रात मे जो पाप उस से हों क्षमा करदेगा । (सुनन अबीदाउद:५०७८)

९.हज़रत अबु मालिक अशारी (र.ज़) से रिवायत है के निसंदेह रसूल अल्लाह (ﷺ) ने कहा: जब तुम मे से कोई सुबह करे तो कहे

اَصْبَحْنَا وَ اَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ خَيْرَ هٰذَا الْيَوْمِ فَتْحَهُ وَ نَصْرَهُ وَ نُوْرَهُ وَ بَرَكَتَهُ وَ هُدَاهُ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَ شَرِّ مَا قَبْلَهُ وَ شَرِّ مَا بَعْدَهُ फ़िर जब शाम करे तो इसी तरह कहे (सही अल जमे अस्सगीर):३५२

१०.हज़रत अब्द अल्लह (र.ज़) से रिवायत है रसूल अल्लाह (ﷺ) शाम करते तो कहते: اَمْسَيْنَا وَ اَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ

अब्दअल्लाह (र.ज़) कहते हैं मेरा ख्याल है आप (ﷺ) ने इन के साथ यह भी कहा: لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، رَبِّ اَسْاَلُكَ خَيْرَ مَا فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ خَيْرَ مَا بَعْدَهَا وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ شَرِّ مَا بَعْدَهَا، رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَ سُوْءِ الْكِبَرِ، رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَ عَذَابٍ فِي الْقَبْرِ और जब सुबह करते तो इस तरह कहते-(सही मुस्लिम:६९१३)

११.नबी (ﷺ) के नौकर हज़रत अबु सलाम(र.ज़) से रिवायत है रसूल अल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: जो मुसल्मान शाम के समय और सुबह के समय यूँ कहता है رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَبِيًّاतो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस से अनिवार्य तरीक़े से राज़ी करेगा! (सुन्न इब्ने मझा:३८७०)

१२.हज़्रत हज़रत अबुहुरेरह(र.ज़) से रिवायत है के एक आदमी रसूल अल्लाह (ﷺ) के पास आया और कहा या रसूल अल्लाह (ﷺ) मुझे बड़ी पीड़ा पहुँची है इस बिच्छु से जिस ने कल रात मुझे काटा-आप (ﷺ) ने फ़रमाया अगर तु शाम को यह केहलेताاَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَतो वह तुझे पीड़ा ना देता -(सही मुस्लिम:६८८०)

१३.हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (र.ज़) कहते हैं मैं ने रसूल अल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमाते थे:जिस ने (शाम को)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَ لَا فِی السَّمَآءِ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُतीन बार पढ़ली उसे सुबह तक कोई अचानक मुसीबत नहीं आएगी और जिस ने(सुबह को) तीन बार पढ़ली उसे शाम तक कोई अचानक मुसीबत नहीं आएगी-रावी कहते है इस हदीस को बताने वाले अबान बिनउस्मान(र.ज़) को फ़ालिज होगया तो इन से हदीस सुन्ने वला उन को आशच्र्य से देखने लगा(फ़िर यह फ़ालिज/अर्धांग कैसे होगया?) उन्होंने कहा: क्या हुआ मुझे क्या देखते हो? अल्लाह की कस्म मै ने हज़रत उस्मान(र.ज़) पर झूट नही बोला है और ना उस्मान (र.ज़) ने रसूल अल्लाह(ﷺ) पर झूट बोला लैकिन जीस दिन मुझे यह फ़ालिज हुआ मै उस दिन गुस्से मे था और यह दुआ पढ़ना भूल गया।(सुनन अबी दाउद ५०८८)

१४.१५. हज़रत अब्दुर्राहमान बिन अबि बक्रह (र.ज़) से रिवायत है मै ने अपने पिताजी से कहा:पिताजी मै ने आप को हर शाम ये प्रार्थना माँगते सुनता हूँ

اَللّٰھُمَّ عَافِنِیْ فِیْ بَدَنِیْ، اَللّٰھُمَّ عَافِنِیْ فِیْ سَمْعِیْ، اَللّٰھُمَّ عَافِنِیْ فِیْ بَصَرِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

आप इस को तीन बार सुबह को पढ़ते हैं और तीन बार शाम को तो बोले:निसंदेह मै ने नबी(ﷺ) को यह प्रार्थना माँगते सुना है बस मै सुन्नत पर अमल करने से मुहब्ब्त करता हूँ।अब्बास बिन अब्दुल अज़ीम (सनद के एक रावी) अधिक फ़रमाया और तुम कहो اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْکُفْرِ وَ الْفَقْرِ، اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَतीन बार जब सुबह करो और शाम करो बस मै ने सुन्नत पर अमल करने से मुहब्बत करता हूँ। (सुनन अबी दाउद ५०९०)

१६.हज़रत अन्स बिन मालिक(र.ज़)रिवायत हैं रसूल अल्लाह (ﷺ)हज़रत फ़ातिमा(र.ज़) को नसिहत की के तुम हर सुबह शाम को यह पढा करो: یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ بِرَحْمَتِکَ اَسْتَغِیْثُ اَصْلِحْ لِیْ شَاْنِیْ کُلَّهٗ وَ لَا تَکِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَیْنٍ(अल मुस्तदर्क लिल हाकिम,ज:१,स:५४५)

१७.हज़रत हसन (र.ज़ी) रिवायत हैं के हज़रत सम्रह बिन जन्दब (र.ज़) ने कहा :क्या मै तुम्हें वह बात ना बताऊँ जो मै ने रसूल अल्लाह (ﷺ) और हज़रत अबु बक्र (र.ज़) और हज़रत उमर (र.ज़) से कई बार सुनी-मै ने कहा :क्यों नहीं-कहा जो सुबह और शाम ये कहे! اَللّٰھُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَ اَنْتَ تَھْدِیْنِیْ وَ اَنْتَ تُطْعِمُنِیْ وَ اَنْتَ تَسْقِیْنِیْ وَ اَنْتَ تُحْیِیْنِیْवह अल्लाह से कोई सवाल ना करेगा मगर वह उसे ज़रूर देगा।वह अब्दुल्लाह बिन सलाम से मिले और उन से कहा:क्या मै तुम्हें वह बात ना बताऊँ जो मै ने रसूल अल्लाह (ﷺ) और हज़रत अबु बक्र(र.ज़)और हज़रत उमर (र.ज़) से कई बार सुनी-मै ने कहा :कयों नहीं-तो मै ने उनहें यह हदीस बताई-उन्हों ने कहा मेरे माँ

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

और बाप आप पर कुरबान अल्लाह ने यह कलिमात मूसा (अ.स) को दिये थे और वह उन के साथ दिन मे सात बार प्रार्थना करते थे और वह अल्लाह से कोई सवाल ना करते मगर यह के अल्लाह उन्हें ज़रूर देते!(अल माज्मल ओसतल तिबरानी,ज:२,स:२०,हदीस:१०३२)

१८.हज़रत शद्द बिन अओस(र.ज़) से रिवायत हैं के रसूल अल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया:सब से बेह्तारीन इस्तिग्फ़ार यह है اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَ اَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَ وَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَ اَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ اِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ जिस ने इस प्रार्थना की बात पर विश्वास रखते हुए सुबह इन को केह लिया और उसी दिन शाम होने से पहले मर गया तो वह जन्नत वालों में से है और जिस ने इस प्रार्थना की बात पर विश्वास रखते हुए रात को इन को पढ़ लिया और फ़िर उस का सुबह होने से पहले मर गया तो वह जन्नत वालों में से है। (सहीह बु.खारी:६३०६)

१९. हज़रत अब्दुल्लाह बिनु उमर (र.ज़) से रिवायत हैं के रसूल(ﷺ) सुबह शाम यह प्राथनाएँ पढ़ना कभी नहीं छोढते ! اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَ الْآخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِیَةَ فِیْ دِیْنِیْ وَ دُنْیَایَ وَ اَهْلِیْ وَ مَالِیْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْعَوْرَاتِیْ وَ آمِنْ رَّوْعَاتِیْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ بَیْنَ یَدَیَّ وَ مِنْ خَلْفِیْ وَ عَنْ یَمِیْنِیْ وَ عَنْ شِمَالِیْ وَ مِنْ فَوْقِیْ وَاَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ (सुनन अबी दाउद ५०७४)

२०.२१.२२.हज़रत माज़ बिन अब्द अल्लाह बिन खबीब (र.ज़) अपने पिता से रिवायत हैं के हम एक बारिश वाली बहुत अँधेरी रात मे निकले जब हम रसूल अल्लाह (ﷺ) को ढूँढ रहे थे के वह हमें नमाज़ पढ़ाऐं ।जब वह हमें मिलें तो आप (ﷺ) ने कहा:"कहो" मै कुछ ना बोला आप (ﷺ) ने फ़िर कहा:"कहो" तो भी मैं कुछ ना बोला आप (ﷺ) ने फ़िर कहा:"कहो" तो मैं ने पुछा-अए अल्लाह के रसूल (ﷺ)!

मैं कया कहूँ? आप(ﷺ) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَ لَمْ يُوْلَدْ ۝ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ
كُفُوًا اَحَدٌ और मुवज़्ज़ततैन यानि قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَ
مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۝ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ النَّاسِ ۝
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ۝ सुबह और शाम
तीन तीन बार कहो तो यह हर चीज़ से तुमहारी हिफ़ाज़त करेंगी ।
(सुनन अबी दाउद ५०८२)

२३. हज़रत अबुदर्दा (र.ज़) ने फ़रमाया जिस ने सुबह और शाम के समय सात बार حَسْبِىَ اللّٰهُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ अल्लाह तआला उस की परेशानियों मे उस की मदद करेगा चाहे इस ने सच्चे दिल से यह क्ल्मा कहा हो या झूटे दिल से। (सुनन अबी दाउद ५०८१)

२४. हज़रत अबु अयाश (र.ज़) से रिवायत हैं के रसूल अल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:जो आदमी सुबह के समय यह केहले तो उसे औलादे इस्माईल मे से एक गुलाम आज़ाद करने का पुण्य/सवाब होगा और उस के लिए दस नेकियां लिखी जाएगी उस से दस गलतियाँ मिटाई जाएगी दस दरजात ऊँचे होँगे और शाम तक शैतान से हिफ़ाज़त मे रहेगा और अगर शाम केहले तो सुबह तक के लिए यही कुछ होगा
لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ।
(सुनन अबी दाउद :५०७७)

२५. हज़रत अबु हुरेरह (र.ज़) से रिवायत हैं के रसूल अल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:जो आदमी सुबह और शाम के समय यह कलमा कहे तो क़यामत के दिन उस से अच्छा अमल कोई ना लाएगा मगर वह आदमी जिस ने इस जैसे कलिमात कहे या उस से ज्यादा कहे سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ (सहीमुस्लिम:६८४३)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सुरक्षा/हिफ़ाज़त कि प्राथनाऐं : तऊज़्ज़ात

१.जामि तारमज़ी :३५९१	८.सही मुस्लिम:६९०६
२.सही मुस्लिम : ६८९८	९. सुनन अबिदाऊद:१५४७
३.सुनन अबिदाऊद:१५५४	१०.सही मुस्लिम: ६८७३
४.सहि अलबुखारी:६३४७	११.अल्मुअज्जिम अल्कबीरुल् तिब्रानि'ज:१७,हदीस:८१०
५.सुनन अबिदाऊद: १५४४	१२.सही इब्न हब्बान,ज:३.हदीस:१०११
६.सही मुस्लिम: ६९४३	१३.सुनन निसाई:५५३३
७ .सुनन अबिदाऊद: १५५१	१४.अल्मुस्तदरिक लिल्हाकिम,ज:१,स:५३०

रात भर हिफ़ाज़त के लिए

हज़रत अबू मसऊद बदरी(र.ज)से रिवायत है के रसूल अल्लाह (ﷺ)ने फ़रमाया:सुरह बक़रा की आखरी दो आयतें जो कोई पढ़ ले वह उस्को किफ़ायत(काफ़ी हो जाती हैं करती हैं !(اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ٚ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَ اعْفُ عَنَّا ۥ وَ اغْفِرْ لَنَا ۥ وَ ارْحَمْنَا ۥ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

(अल्बक़रा२८५- २८६) (सही बुखारी:४००८)

दुश्मन के शर से हिफ़ाज़त के लिए

१.असहाब उल अख्दुद का वाक़या: वह वाक़या जिस में लड़के ने दुश्मन के शर से बचने के लिए दुआ की(सही मस्लिम: ७५११): اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْهِمْ بِمَا شِئْتَ

२.हज़रत अबू मूसा अशअरी(र.ज)से रिवायत है के नबी को जब किसी क़ोम से कोई अंदेशा/शंका या खोफ़ होता तो इस तरह दुआ करते :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَ نَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ (सुनन अबूदाऊद:१५३७)

३.हज़रत मूसा कि दुआ जब फिरओन ने उनको क़तल करने का ईरादा किया وَ اِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَ رَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ (ग़ाफ़िर:२७)

४.हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद(र.ज)ने फ़रमाया के जब तुम में से किसी पर एसा इमाम् आए जिस कि ख़ुद पसंदी और ज़ुल्म से तुम डरो पस चाहिए के कहो:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبعِ وَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، كُنْ لِیْ جَارًا مِنْ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ وَّ اَحْزَابِهٖ مِنْ خَلَائِقِكَ، اَنْ يَفْرُطَ عَلَیَّ اَحَدٌ مِّنْهُمْ اَوْ يَطْغٰى، عَزَّ جَارُكَ وَ جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

(अलअदब अलमुफ़ररीदुल बखारी ७०७)

५.हज़रत इब्न अब्बास(र.ज़)से रिवायत ह के उन्होंने कहा:जब तुम किसी ज़ालिम सुल्तान (बादशाह)के पास आओ और तुम्हें यह खोफ़ हो के वह तुम पर ग़ालिब ज़बरदस्त आजाए तो कहो (अलअदब अलमुफ़ररीदुल बखारी ७०७)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَعَزُّ مِن خَلْقِهٖ جَمِيْعًا، اَللّٰهُ اَعَزُّ مِمَّا اَخَافُ وَ اَحْذَرُ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِیْ لَاَ اِلٰهَ اِلاَّ هُوَ الْمُمْسِكِ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ اَنْ يَّقَعْنَ علی الْاَرْضِ اِلاَّ بِاِذْنِهٖ ، مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلَانٍ وَّ جُنُوْدِهٖ وَ اَتْبَا عِهٖ وَ اَشْيَا عِهٖ مِنَ الْجِنِّ وَ الاِنْسِ، اللّٰهُمَّ كُنْ لِّیْ جَارًامِّنْ شَرِّ هِمْ ,جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَعَزَّ جَارُكَ, وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَ لاَ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सोते में वेह्शत/घबराहट के वक्त

१.हज़रत उमरू बिन शुएब (रह)अपने दादा से रिवायत करते है के रसुल(ﷺ)ने फ़रमाया:जब तुम में से कोई नींद में ड़र जाए तो कहे اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَ عِقَابِهٖ وَ شَرِّ عِبَادِهٖ وَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ तो वह (खाब /स्वप्न)उस्को नोख्सान न

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

देगा!(जामी तिर्मज़ी३५२८)

२.हज़रत खालिद बिन वलीद(र.ज़)रिवायत करते है के मै रात को(नींद में)घबरा जाया करता था,फिर मै नबी(ﷺ)के पास हाज़िर हुआ तो मै ने अर्ज़ कि:मै रात को (नींद में) ड़र जाता हूँ तो मैं अपनी तलवार उठा लेता हूँ और जो चीज़ सामने आती है मै उसे तलवार से मार डालता हूँ -आप(ﷺ)ने फ़रमाया क्या मै तम्हें वह कलिमात न सिखाऊँ जो के रुहुल अमिन ने मुझे सिखाए-तो मै ने कहा:क्यों नहीं आप(ﷺ)ने फ़रमाया :कहो أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِىْ لَا يُجَاوِزُ هُنَّ بَرٌّ وَ لَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَ مِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ مِنْ كُلِّ طَارِقٍ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمَانُ

(अल मुअज्जम अल अवसत लिल्तिब्रानी जिम ४ हदीस:५४१५)

बुरा ख़ाब/सपना देखने पर

१.हज़रत जाबिर(र.ज)से रिवायत है के रसूल(ﷺ)ने फ़रमाया जब तुम मे से कोई एसा ख़ाब/सपना देखे जिस को वह बुरा समझे तो बाएँ तरफ़ तिन बार थुतकारे और शयतान से पनाह/शरण माँगे और जिस करवठ पर लेटा हो उस से फ़िर जाऐ! (सहिह मुसलिम:५९०४)

२.हज़रतअबूसलमा रिवायत करते है के मै थोड़े ख़ाब ऐसे देखता के जो मुझे बिमारकर देते फिर मै हज़रत अबू क़त्तादा से मिला उनहोंने कहा मेरा भी यही हाल था यहाँ तक के मै ने रसूल(ﷺ)को फ़रमाते हुए सुनाअच्छा : ख़ाबअल्लाह तआला कि तरफ़ से होता है सो जब तुम मे से कोई अच्छा ख़ाब देखे तो अपने दोस्त के इलावा किसी से बयान न करे और जब बुरा ख़ाब देख तो बाएँ तरफ़ तीन बार थुतकारे और यह कह कर अल्लाह कि पनाह/शरण चाहे أَعُوْذُ بِاللهِ مِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَ شَرِّهَاऔर किसी से बयान न करे तो वह उसको नोक़सान न देगा!(सहिह मुसलिम :५९०३)

वसवसो से निजात के लिए

१(३६:फुस्सीलात).

२सहिह). बुख़ारि(६६६४:

३हज़रत. उसमान बिन अबुल आसनबि (ज़.र) (ﷺ) के पास आए और कहाया: रसूल अल्लाह(ﷺ)!शयतान मेरे और मेरी नमाज़ के बिच आवरण होता है तो मेरी क़िरात मे शक डालता हैरसूल ! अल्लाह(ﷺ) ने फ़रमायाउस: शयतान का नाम ख़नज़ब हैजब. उसकी उकसाहठ मेहसूस हो तो नमाज़ मे हि तऊज़ .... اَعُوْذُ بِاللهِ مِن पढो और बाएँ तरफ़ तिन बार (दिल के ऊपर) हज़रत -थुतकारो उसमानर).ज़ (फ़रमाते हैं मैने ऐसा हि किया और अल्लाह तआला ने शयतान को मुझ से दूर कर दिया – (सहिह मुसलिम५७३८:)

४हज़रत . अयशा(र.ज़) ने बयान किया के रसूल(ﷺ)जब अपने बिस्तर पर आराम फ़रमाने के लिए लेठते तो अपनी दोनों हथेलियों पर (قُلْ هُوَاللهُ اَحدٌ)और मुवज़्ज़ततैन(فلق،انّاس)पढ़ कर दम करते/फ़ुकते फिर दोनो हाथों से चेहरे पर और जिस्म के जिस हिस्से तक हाथ जाता फ़ेरते-हज़रत आयशा(र.ज़)ने फ़रमाया के फिर जब आप(ﷺ)बिमार होते तो आप (ﷺ) मुझे इसी तरह करने का हुक्म देते थे !

१.(अल मूमिनून:९८-९७)

२.हज़रत अबू सईद ख़ुदरि(र.ज़)बयान करते हैं के रसूल अल्लाह(ﷺ) जब रात को क़्याम/निवास फ़रमाते तो तकबीर कहते और फ़िर यूँ कहते

سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلاَ اِلٰهَ غَيْرُكَफ़िर कहते

لَا اِلٰهِ اِلَّا اللهُ ३ बार फ़िर कहते (اَكْبَرُ كَبِيْرًا اَللهُ)३ बार اَعُوْذُ بِاللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ هَمْزِهِ وَ نَفْخِهِ وَ نَفْثِهِ उसके बाद आप क़िरआत फ़रमाते!

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

३.जनाब अबू ज़ुमेल (समाक बिन दलिद हनफ़ि)कहते है के मैने हज़रत ईब्न अब्बास (र.ज़)से सवाल किया :इस केफ़यत/ हालत का क्या हो जो मै अपने सीने मे पाता हूँ ? उन्होंने पूछा:वह क्या है?मै ने कहा: अल्लाह कि क़सम!मै उसे ज़बान पर नहीं ला सकता-उन्होंने कहा:क्या वह आशंका वाली बात है?
और वह हंस दिए और बोले:उस्से किसी को निजात/मुक्ति नहीं -
यहाँ तक के अल्लाह ने यह आयत उतारी
(فَاِنْ كُنْتَ فِىْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ) (यूनुस :९४) फिर उन्होंने ने मुझ से कहा:जब तुम अपने जी मे कुछ मेहसूस करो तो यह पढ़ा करो
هُوَالاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ والظَّاهِرُ والْبَاطِنُ ۚ وَهُوَبِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ(अलहदीद :३)(सुनन अबि दाऊद:५११०)

४.हज़रत इब्न अब्बास (र.ज़)से रिवायत है के एक आदमी नबी (ﷺ) कि ख़िदमत मे आया और कहने लगा:ए अल्लाह के रसूल(ﷺ)!हमारे दिल मे कुछ ख़यालात आते हैं और वह इशारे इंगित से कुछ इस तरह कह रहा था के उन ख़यालात को ज़बान पर लाने कि बजाए कोयला हो जाना उसे ज़्यादा पसंद है तो रसूल अल्लाह ने फ़रमाया اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي رَدَّ كَيْدَهُ اِلَي الْوَسْوَسَةِ (सुनन अबि दाऊद:५११२)

नज़र लगने पर

१.(सहीह मुस्लिम:५७०२)
२.बिमारयों से शिफ़ा के लिए नंबर १,देखिए:वस्वसो से निजात के लिए नंब ४
१.हज़रत इब्न अब्बास(र.ज़)से रिवायत है के नबी(ﷺ)हज़रत हसन (र.ज़)व हुसेन(र.ज़)के लिए पनाह तलब किया करते थे और फ़रमाते के तुम्हारे बुज़ुर्ग/बूढ़े दादा (इब्राहीम) भी इस्माईल (अ.स)और इस्हाक़ (अ.स) के लिए इन कलिमात के ज़रिए पनाह तलब किया करते थे
सहिह बुख़ारि (३३७१) اللهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّ هَامَّةٍ وَّ مِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّة اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

२.हज़रत अबू सईद(र.ज)से रिवायत है के हज़रत जिब्रईल(अ.स) रसूल अल्लाह के पास आए और कहने लगे:ए मुहम्मद(ﷺ) बिमार हो?
आप(ﷺ)ने फ़रमाया हाँ- जिब्रईल(अ.स) ने फ़रमाया:
بِسْمِ اللهِ اَرْقِيْكَ ، مِنْ يُؤْذِيْكَ شَيْءٍ كُلِّ مِنْ اَرْقِيْكَ اللهِ بِسْمِ يَشْفِيْكَ اللهُ اَ حَاسِدٍ، عَيْنٍ اَوْ نَفْسٍ كُلِّ شَرِّ
(सहिह मुस्लिम ५७००)
३.हज़रत आयशा(र.ज़)से रिवायत है के एक बार रसूल अल्लाह बिमार हुए तो जिब्रईल (अ.स) ने यह दुआ पढ़ी بِسْمِ اللهِ يُبْرِيْكَ وَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يَشْفِيْكَ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ وَ شَرِّ كُلِّ ذِیْ عَيْنٍ (सहिह मुस्लिम५६९९)

जादू,जिन्नात और शयातीन के शर से हिफ़ाज़त के लिए

१.हज़रत आमिर बिन साद अपने बाप से रिवायत करते हैं के नबी करीम(ﷺ) ने फ़रमाया:"जो हर रोज़ सुबह सात अजवा खजूरें खाएगा उस दिन वह जादू और ज़हर/विश से बचा रहेगा''(सहिह बख़ारी:५४४५)

२.हज़रत अबू हुरेरासे रिवायत है उन्होनें कहा आप (ज़.र)(ﷺ)ने मुझ को सदक़े फ़ित्र कि निगहबानी निगरानी पर नियुक्त /फ़रमाया-उतने मे एक आदमी आया- वह लप भर भर कर उस्में से खजूरें लेने लगा-
मैं ने उस्को पकढ़ लिया मैं ने कहा मै तुझ को ज़रुर रसूल अल्लाह(ﷺ)के पास ले जाऊँगा,छोढूँगा नहीं फ़िर पूरा क़िस्सा बयान करुँगा तो वह कहने लगा-
अबू हुरेराजब!(ज़.र) तू सोने के लिए बिस्तर पर जाए तो आयतल कुर्सि पढ़ ले-
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَاالَّذِیْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلاَّ بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا يُحِيْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا يَؤُدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِيْمُ सुबह तक अल्लाह कि तरफ़ से तुझ पर एक फ़रिशता नियुक्त रहेगा और तेरे पास शयतान न आ पाएगा-
अबू हुरेरा)र.ज़(ने यह बात नबी(ﷺ) से बयान की आप ﷺने फ़रमाया

वह तो बढ़ा झूटा है मगर यह बात उस ने सच कही,यह शयतान था!

(अलबक़रा:२५५, सहिह बखारी:५०१०)

३.देखे:वस्वसो से निजात के लिए नं:४

४*१.हज़रत नोमान बिन बशीरसे(ज़.र) रिवायत है के रसूल अल्लाह(ﷺ)
ने फ़रमाया :बेशकआस्मान! और ज़मीन कि तख़लीक़/ पैदा करने से पहले
अल्लाह तआला ने एक किताब तहरीर लिखाई फ़िर/उस मे से दो एसी आयतें
उतारी के उन्के साथ सूरह बक़रा को ख़तम फ़रमाया और एसा
मुम्किन नहीं के यह दोनों किसी घर मे तीन रात पढ़ि जाऐ और फ़िर शयतान
उस के क़रीब आएसुनन)- दारमी३३८७:)

२.हज़रत अबू मसऊद बदरी(र.ज़)से रिवायत है के रसूल अल्लाह(ﷺ)ने फ़रमाया:
सूरह बक़रा की आख़री दो आयतें जो रात को पढ़ ले वह उसको किफ़ायत
(काफ़ी हो जाती हैं)करती हैं !

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَ
قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا
لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ
وَ اعْفُ عَنَّا ۟ وَ اغْفِرْ لَنَا ۟ وَ ارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

(अल बक़रा :२८५-२८६)(सहिह बुखारि:४००८)

*५ .हज़रत अबू हुरैरा) र.ज़(से रिवायत है के रसूल अल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया
के अपने घरों को क़बरस्तान/शमशान न बनाओ बे शक शयतान उस घर से भाग जाता
है.जिस मेسُوْرَةُا لبَقَّرَة कि तिलावत कि जाती है !(सहिह मुस्लिम:१८२४(

*६.आडयो केसेठ:आसेब,जादू और नज़र बद का इलाज सअद अल ग़ामदि: QO33

१.हज़रत सुलेमान बिन सरद)र.ज़(ने बयान किया के दो आदमियों ने नबी (ﷺ)
की मौजूदगी मे झगड़ा किया, हम भी आप की ख़िदमत मे बेठे हुए थे एक आदमी दूसरे को
गुस्से कि हालत मे गाली दे रहा था और उसका चेहरा सुर्ख/लाल था नबी (ﷺ) ने फ़रमा
के मै एक ऐसा कलमा जानता हूँ अगर यह आदमी उसे कह लें तो उसका गुस्सा

दूर हो जाए -अगर यह اَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ कह ले-सहाबा ने उससे कहा के सुनते नहीं नबी क्या फ़रमा रहे हैं उसने कहा के मै दिवाना नहीं हूँ!(सहिह बुखारी६११५:)

२.हज़रत अब्दुल अज़ीज़ (रह)बिन सुहेब से रिवायत है के मैं ने हज़रत अनस(र.ज़) से सुना वह फ़रमाते थे के नबी(ﷺ)शौचाल्य मे जाते समय फ़रमाते- اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَ الْخَبَائِثِ(सहिह बुखारी: १४२)

३.हज़रत अनस(र.ज़) से रिवायत है के रसूल अल्लाह(ﷺ)ने फ़रमाया:
जब बन्दा अपने घर से निकले और यह कलिमात कह بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ तो उस समय उसे कहा जाता है:तुझे हिदायत/निदेश दी गई,तेरी किफ़ायत कि गई और तुझे बचा लिया गया (हर मुसीबत से)
तो शयातीन उस्से दूर हो जाते है और दूसरा शयतान उससे कहता है तेरा दाऊ/छल ऐसे आदमी पर क्योंकर चले जिसे हिदायत/निदेश दि गई और किफ़ायत/पर्याप्ति कि गई और उसे बचा लिया गया! (सुनन अबि दाऊद:५०९५)

४.हज़रत इब्न अब्बास)र.ज़(नबी(ﷺ) से रिवायत करते है के आप (ﷺ)ने फ़रमाया :
जब तुम मे से कोई अपनी पत्नि से जिमा/मुबाशिरत करे तो कहे- بِسْمِ اللهِ، اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَ جَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا दुआ पढ़ने के बाद
जिमा) करने सेपति(पत्नि को जो औलाद मिलेगी उसे शयतान हानि नहीं पहुँचा सकतासहिह)- बुखारी (१४१:

५वस्वसो:देखे. से निजात के लिए नं२:

६.हज़रत हयवह बिन शरीह कहते हैं के मै बिन मुस्लिम से मिला और उनसे उक़बा कहा के मुझे यह बात पहुँची है के आप अब्दुल्लाह बिन उमरु बिन आस(र.ज़)कि सनद से नबी(ﷺ)से बयान करते हैं के आप (ﷺ)जब मस्जिद मे प्रवेश اَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ بِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَ سُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ . होते तो यह कहते थे !

उन्होंने कहा:बस इतना ही? मै ने कहा :हाँ उन्होंने कहा के इन्सान जब यह कह लेते है तो शयतान कहता है के आज सारे दिन के लिए यह मेरे से महफ़ूज़ हो गया-(सुनन अबि दाऊद:४६६)

७.हज़रत अबू हुरैरा(र.ज़) से रिवायत है के रसूल अल्लाह(ﷺ)ने फ़रमाया: जिस ने एक दिन मे सौ बार यह कहा तो उस्को दस गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा لَا اِلٰهِ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٍ और उस के लिए सौ नेकिया लिखी जाऐंगी और उसकी सौ बुराईयाँ माफ़ होंगी और उस दिन शाम तक वह शयतान के शर से महफ़ूज़ रहेगा और उससे अफ़ज़ल अमल कोई न लाऐगा मगर वह आदमी जिसने उससे ज़्यादा बार यहीं कहा होगा-और जिस दिन मे सौ बार कहा سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ तो उसके गुनाह माफ़ किए जाऐंगे चाहे वह समंदर कि झाग के बराबर क्यों न हो!
(सहिह मुस्लिम :६८४२)

बिमरीयों/रोगों से चिकित्सा के लिए

१*.इसराअ:८२)

२*.(युनुस:५७)

१*.१ .हज़रत अबु सईद खुदरी (र.अ) से रिवायत है के रसूल (ﷺ)के सहाबा में से कुछ लोग सफ़र मे थे और अरब के किसी क़बीले पर गुज़रे उन्हों ने क़बीले वालों से अतिथ्य/मेहमान-दारी चाही मगर उन्हों ने इन्कार कर दिया।फ़िर उन्के सर्दार को बिच्छु ने काटा तो केहने लगे तुम मे कोई झाड फूँक करने वाला है।सहाबा मे से एक आदमी बोला हाँ मुझ को मंत्र आता है फ़िर उसने सुरह फ़ातिहा पढा वह अच्छा होगया और एक ग़ल्ला बक्रियों का दिया उसने ग़ल्ला लेने से इन्कार कर दिया और कहा रसूल अल्लाह(ﷺ)से पूछ लूँ फ़िर आप (ﷺ) के पास आकर खिस्सा बयान किया और कहा या रसूल(ﷺ) अल्लाह की क़सम मै ने सुरह फ़ातिहा के सिवा कुछ मंत्र नहीं किया। आप (ﷺ) हँसने लगे और फ़रमाया तुझे कैसे

मालूम हुआ के वह मंत्र है फ़िर फ़रमाया:लेलो और अपने साथ मेरे लिए भी एक हिस्सा लगाओ। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۝ اِهْدِنَاالصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ۝
(सुरह फ़ातिहा:१-७)(सही मुस्लिम:५७३३)

२*. खारजा बिन सल्त तमेमी अपने चचा से रिवायत करते है के वह नबी (ﷺ) के पास आए और इस्लाम क़ुबूल किया।आप (ﷺ) से वापसी पर उन्का गुज़र एक क़ोम के पास से हुआ; जिन मे एक दिवाना आदमी बेड़ीयों मे जकड़ा हुआ था।उस के घर वालों ने कहा:हमें मालूम हुआ है आप के साहब नबी (ﷺ)भलाई के साथ आए हैं तो क्या आप लोगों के पास इस के इलाज के लिए कोई चीज़ है? मैं ने सुरह फ़ातिहा पढ़ कर दम किया तो वह ठीक होगया और उन्होंने मुझे सौ बकरियां दी। फ़िर मैं रसूल अल्लाह(ﷺ) के पास आया और सब कुछ बताया तो आप (ﷺ) ने पुछा:किया तू ने इस के सिवा भी कुछ पढ़ा? मै ने जवाब दिया नहीं आप (ﷺ) ने फ़रमाया:ले लो,मेरी ज़िन्दगी की कस्म अगर कोई बातिल झाड फूंक से खा सकता है,तो तुम ने तो सच्चे दम के ज़रिए खा रहे हो।(सुनन अबुदाउद:३८९६)
२. हज़रत अयूब (अ.स) की दुआ जब उन को रोग लग गया था
اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ (अंबिया:८३)

३. हज़रत उस्मान बिन अबील आस सक्फ़ी (र.अ) से रिवायत है के उन्होंने रसूल अल्लाह(ﷺ) से दर्द की शिकायत की के जब से वह मुस्लमान हुए हैं,पूरे जिसम मे दर्द रह्ता है ।आप (ﷺ) ने फ़रमाया अपना हाथ दर्द की स्थान पर रखो और तीन बार بِسْمِ اللّٰهِकहो इस के बाद सात बार यह कहो اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَ قُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَ اُحَاذِرُ
(सही मुस्लिम:५७३७)

४. हज़रत इब्ने अब्बास(र.अ)से रिवायत है रसूल अल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:जिस ने किसी एसे रोगी की मिज़ाज पुरसी की जिस की अभी मौत ना आइ हो तो सात

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

बार उस के पास यह दुआ اَسْاَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَشْفِيَكَ पढ़े तो अल्लाह तआला उस को इस रोग से अफ़ीयत दे देगा ।(सुनन अबुदाउद:३१०६)

५. हज़रत आईशा (र.अ) से रिवायत है के जब हम मे से कोई बिमार होता रसूल अल्लाह(ﷺ) अपना दायां हाथ उस पर फ़ेरते फ़िर फ़रमाते
اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا
(सही मुस्लिम:५७०७)

रोगी की मिज़ाज पुर्सी के समय

१*(सही बुखारी:५६४९)
२*(मुसनद अहमद:९७५)(जमे तिर्मेज़ी:९६७,९६९)
३*(सही मुस्लिम:६५५६)

१.हज़रत अली(र.ज़) से रिवायत है के मै बिमार हुआ तो रसूल अल्लाह(ﷺ)मेरे पास आए और मैं यह केह रहा था या अल्लाह अगर मेरी मृत्यु नज़्दीक आई है तो मुझे राहत दे और अगर मेरी म्रत्यु दूर है तो मुझे उठा खडा करदे (चिकित्सा देदे) और अगर मेरी परिक्षा है तो मुझे धैर्य दे।फ़िर आप (ﷺ) ने फ़रमाया: तू कैसे केह रहा था?तो मैं जो केह रहा था दोहरा दिया।तो आप (ﷺ) ने अपने पैर से मुझे मारा और फ़रमाया: اَللّٰهُمَّ عَافِهِ **या** اَللّٰهُمَّ اشْفِهِ रावी को शुबा हुआ । हज़रत अली ने फ़रमाया:फ़िर इस के बाद मुझे यह रोग ना लगा।(जमे तिर्मेज़ी:३५६४)

२.हज़रत इब्ने अब्बास (र.ज़) से रिवायत है रसूल अल्लाह(ﷺ) एक आदमी की मिज़ाज्पुरसी के लिए गए और उन से फ़रमाया: لَا بَاْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ लैकिन उस ने जवाब दिया के हर्गिज़ नहीं यह एसा बुखार है जो एक बूढ़े पर गालिब आचुका है और क़बर पहूँच कर रहेगा इस पर नबी(ﷺ)ने फ़िर फ़रमाया एसा ही होगा। (सही बुखारी:५६६२)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

३.देखिए:रोगों की चिकित्सा के लिए नं:४
४.देखिए:रोगों की चिकित्सा के लिए नं:५

मुसीबत ज़दा और बीमार को देख कर

हज़रत अबू हुरैरा(र.ज़)से रिवायत है के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया:
مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ وَ فَضَّلَنِيْ عَلَى كَثِيْرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ عَافَانِيْ
जो कोई इस दुआ(प्रार्थना)को मुसीबत के समय पढ़ेगा उसको कोई तकलीफ़ न पहूँचेगी! (जामि तिरमज़ी:३४३)

मुसीबत और ग़म कि खबर सुनने पर

हज़रत उमे सलमा (र.ज़)फ़रमाती है रसूल(ﷺ)ने फ़रमाया :जब
किसी मुसलमान को मुसीबत पहुँचे और वह यह दुआ माँगे जिसका अल्लाह ने हुकुम दिया है إِنَّا لِلّٰهِ وَ إِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ، اَللّٰهُمَّ أْجُرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَ اَخْلِفْ لِيْ خَيْرًا مِّنْهَا
तो अल्लाह उसको पहले से बेहतर बदल अता फ़रमाएगा !(सहिह मुस्लिम: २१२६)

मुर्दे की श्रमा के लिए

१.हज़रत यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन रकाना बिन मत्लब फ़रमाते हैं रसुल अल्लाह (ﷺ) जब नमाज़े चिता के लिए खडे होते तो फ़रमाते

اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ وَ ابْنُ اَمَتِكَ، اِحْتَاجَ اِلَى رَحْمَتِكَ وَ اَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهِ اِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِيْ اِحْسَانِهِ وَ اِنْ كَانَ مُسِيْئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ (मुस्तद्रक लिल्हकिम,ज:१,स:३५९)

२. हज़रत वाला बिन इस्खा बताते हैं के रसुल अल्लाह(ﷺ)ने हमें एक मुस्ल्मान की नमाज़े चिता पढ़ाई।मै ने आप को यह केह्ते हुए सुना"अए फ़लान बिन फ़लान तेरे ज़िम्मे और तेरी अश्र्य मे है,तो उस खबर की परिक्षा से बचा" जब अब्दुरहमान बिन इब्रहीम(सन्द के रावी)ने यूँ कहा

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَللّٰهُمَّ اِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ فِیْ ذِمَّتِكَ وَ حَبْلِ جِوَارِكَ فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَ عَذَابِ النَّارِ وَ اَنْتَ اَهْلُ الْوَفَاءِ وَ الْحَقِّ اَللّٰهُمَّ فَاغْفِرْ لَهُ وَ ارْحَمْهُ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ (सुन्न अबी दाउद:३२०२)

गुनाहों {पापों) की बखशिश के लिए

*१.(नुह:१०-१२)

*२.(मसनद अहमेद,शरह व सनआ फहारिसह:अहमद मुहममद शाकिर (सही:२२३४)

१.हज़रत सोबान (र.ज़) से रिवायत है रसूल अ्लाह(ﷺ) اَسْتَغْفِرُ اللّٰه जब अपनी नमाज़ खतम करते तो तीन बार केहते| (सही मुसलिम :१३३४)

२.हज़रत आइशा(र.ज़)से रिवायत है रसूल अल्लाह(ﷺ)अपने रुकू और सजदे मे अकसर यह केहते थे سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَ بِحَمْدِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ (सही मुसलिम :१०८५)

३.हज़रत अबु हुरेराह(र.ज़)से रिवायत है रसूल अल्लाह(ﷺ) और सजदे मे सजदे मे यह प्रार्थना करतेاَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ كُلَّهُ دِقَّهُ وَ جِلَّهُ وَ اَوَّلَهُ وَ آخِرَهُ وَ عَلَانِيَتَهُ وَ سِرَّهُ (सही मुस्लिम:१०८४)

४.हज़रत अबु बक्र सिद्दीख़(र.ज़)से रिवायत है के उन्हों ने रसूल अल्लाह(ﷺ)से कहा:या रसूल अल्लाह(ﷺ) मुझे एक प्रार्थना सिखाइए जिस को मैं अपनी नमाज़ मे पढ़ा करूँ!

आप(ﷺ)ने फ़रमाया: कहो

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِیْ مَغْفِرَةً عِنْدِكَ وَ ارْحَمْنِیْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ(सही मुस्लिम:६८६९)

५.हज़रत राफ़े बन ख़्दीज से रिवायत है के एक बार रसूल अल्लाह(ﷺ)की मज्लिस मे जमा थे तो आप(ﷺ)ने उठ्ने का इरादा किया तो फ़रमाया :

سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ، اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ، عَمِلْتُ سُوْءًا وَ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ، فَاغْفِرْ لِىْ، فَاِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبِ اِلَّا اَنْتَ

तो हम ने कहा:ऐ अल्लाह के रसूल अल्लाह(ﷺ)ये कलिमात जो आप(ﷺ)ने बयान फ़रमाए हैं?आप(ﷺ):जी हाँ! जिब्रईल(अ.स)मेरे पास आए और कहा:ऐ मुहम्मद (ﷺ)! ये मजलिस का कफ़्फ़ारा (सद्ख़ा) है।
(अल्मुस्तद्रक अल्म्हाक्म,ज:१,स:५३७)

६.हज़रत आइशा(र.ज़)से रिवायत है रसूल अल्लाह(ﷺ)मृत्यु से पेहले अक्सर यह फ़रमातेسُبْحَانَكَ وَ بِحَمْدِكَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَमै ने पुछा ये रसूल अल्लाह(ﷺ)ये कया कलिमे हैं जिन को आप(ﷺ)ने कहा आप(ﷺ)इन्हीं को कहा करते हैं।आप(ﷺ)ने फ़रमाया: मेरे लिए मेरी उम्मत मे एक निशानी रखदी गई जब मै ने उस को देखा तो यह कलिमे कहे,-اِذَا جَآء نَصْرُاللهِ وَالْفَتْحُ---الخ (सही मुस्लिम:१०८६)

७. हज़रत अब्दुल्ल्ह बिन उम्र केहते हैं निसंदेह हम गिनते थे के आप(ﷺ) एक एक मज्लिस मे सो सो बार ये कलिमे केह्ते और दुहराते थे
رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَ تُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ(सुन्न अबी दाऊद :१५१६)

८. हज़रत ज़ैद (र.ज़) नबी(ﷺ)को फ़रमाते हुए सुना जो आदमी यूँ केह्ता है اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِى لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَيْهِ तो उस को बख्श(माफ़) कर दिया जाता है अगर वह जिहाद से भी भागा हुआ हो ! (सुन्न अबी दाऊद :१५१७)

९.हज़रत अबु मुसा (र.ज़) केहते हैं के मै नबी(ﷺ) के पास आया और आप(ﷺ) वज़ु कर रहे थे तो मै ने आप(ﷺ) को दुआ करते हुए सुना।आप(ﷺ)फ़रमा रहे थे

मै ने सुना है आप(ﷺ) ऐसे और ऐसे اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ وَ وَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَ بَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ फ़रमा रहे थे,आप(ﷺ) ने फ़रमाया तो किया (अल्लाह से प्रार्थना) माँगना छोड़ दें। (सुन्न अल्कुबरा लिन्नीसाई:९८२८)

१०.हज़रत ज़ुबैर अन्सारी फ़रमाते हैं जब नबी(ﷺ) अपने बिस्तर पर आते तो फ़रमाते اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ وَ اَخْسَأْ شَیْطَانِیْ وَ فُكَّ رِهَانِیْ وَ ثَقِّلْ مِیْزَانِیْ وَ اجْعَلْنِیْ فِی النَّدِیِّ الْاَعْلٰی (अल्मुस्तद्रक लिल्हाकिम,ज:१,स:५४०)

११.हज़रत अबु मुसा अशारी रिवायत करते हैं के नबी(ﷺ)प्रार्थना करते थे.... اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ خَطِیْئَتِیْ وَ جَهْلِیْ وَ اِسْرَافِیْ فِیْ اَمْرِیْ (सही बुख़ारी:६३९९)

१२.हज़रत अली बिन तालिब (र.ज़) से रिवायत है के रसूल अल्लाह तशाहुद के बाद सलाम फ़ेरने के पेहले ये प्रार्थना करते اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ مَا قَدَّمْتُ وَ مَا اَخَّرْتُ وَ مَا اَسْرَرْتُ (सही मुस्लिम:१८१२)

१३.देखिए :सुबह शाम की प्रार्थनाऐं न:१८

रंज व (दुख) ग़म के निवार्ण के लिए

१.हज़रत यख़ूब (अ.स) ने अपने पुत्रों से मिलने वाली अज़्यत और शदीद ग़म मे यह प्रार्थना की اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّیْ وَ حُزْنِیْٓ اِلَی اللّٰهِ

२.हज़रत अस्मा बिन्त उमैस (र.ज़) से रिवायत है के रसूल अ्ललाह(ﷺ) ने मुझे फ़रमाया: कया मैं तुम्हें ऐसे शब्द ना सिखा दूँ जो तुम चिंता के समय पढ़ा करो اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّیْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَیْئًا(सुन्न अबी दाउद:१५२५)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

३.हज़रत साद (र.ज़) से रिवायत है के रसूल अ़ललाह (ﷺ) ने मुझे फ़रमाया: युनुस की प्राथना जो उन्हों ने मछली के पेट मे पढ़ी لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ जिस मुसल्मान ने किसी बात को इस प्रार्थना के साथ माँगा,अल्लाह ताला ने उस की प्रार्थना क़ुबूल फ़रमाई।(जामे तिर्मेज़ी:३५०५)

४.हज़रत अनस (र.ज़) से रिवायत है के रसूल अ़ललाह(ﷺ) फ़रमाया करते
اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا وَّ اَنْتَ تَجْعَلُ الحَزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ
(सहिह इब्न हब्बान,ज:३,ह:९७४)

४.हज़रत अनस बिन मालिक (र.ज़) से रिवायत है के रसूल अ़ललाह(ﷺ)फ़रमाया करते اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَ الحَزَنِ وَ الْعَجْزِ وَ الْكَسَلِ وَ الْجُبْنِ وَ الْبُخْلِ وَ ضَلَعِ الدَّيْنِ وَ غَلَبَةِ الرِّجَالِ
(सही बुख़ारी:६३६९)

६.हज़रत अब्दु रहमान बिन अबी बक्र अपने पिता से रिवायत करते हैं के रसूल अल्लाह (ﷺ) ने यह भी फ़रमाया:चिंता के समय के लिए यह प्रार्थना की
اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْ فَلَا تَكِلْنِىْ اِلٰى نَفْسِىْ طَرْفَةَ عَيْنٍ وَّ اَصْلِحْ لِىْ شَاْنِىْ كُلَّهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ
(सुनन अबि दाऊद)
७.हज़रत इब्ने अब्बास (र.ज़) से रिवायत है के नबी(ﷺ)बेचैनी या चिंता के समय यह प्रार्थना करते थे لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبُّ الْاَرْضِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمُ (सही बुख़ारी:६३४६)

८.हज़रत अब्दुल्लह बिन मसूद से रिवायत है के रसूल अल्लाह (ﷺ):जब किसी को कोई दुख या दर्द हो तो वह कहे اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ عَبْدُكَ، ابْنُ عَبْدِكَ، ابْنُ اَمَتِكَ، نَاصِيَتِىْ بِيَدِكَ، مَاضٍ فِىَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِىَّ قَضَاؤُكَ، اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَلَكَ، سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ اَوْ عَلَّمْتَهُ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوْ اَنْزَلْتَهُ فِىْ كِتَابِكَ اَوِسْتَاْثَرْتَ بِهِ فِىْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيْعَ قَلْبِىْ وَ نُوْرَ صَدْرِىْ وَ جَلَاءَ حُزْنِىْ وَ ذَهَابَ هَمِّىْ तो अल्लाह उस की तकलीफ़ व ग़म को दूर करदेगा और उस की जगाह उसे खुशी देगा! (मुस्नद अहमद ,ज:६स:२४६,हदीस:३७१२)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

*हज़रत अबी बिन काब (र.ज़) फ़रमाते हैं के मै ने अर्ज़ किया-ऐ अल्लाह रसूल (ﷺ)! मै आप (ﷺ) पर बहुत ज़्यादा दुरूद भेजता हूँ ,अपनी प्रार्थना मे कितना समय दुरूद के लिए रख दूँ ?

आप(ﷺ) ने फ़रमाया:जितना तू चाहे -मैं ने कहा एक चौथाई सही है?आप(ﷺ) ने फ़रमाया: जित्ना तू चाहे परंतु इस से ज़्यादा करे तो तेरे लिए अच्छा है-मै ने पुछा किया आधा समय रख दूँ ?आप (ﷺ) ने फ़रमाया: जित्ना तू चाहे परंतु इस से ज़्यादा करे तो तेरे लिए अच्छा है-मै ने पुछा किया दो तिहाई रख दूँ?आप(ﷺ)ने फ़रमाया: जित्ना तु चाहे परंतु इस से ज़्यादा करे तो तेरे लिए अच्छा है-मै ने पुछा किया अपनी सारी प्रार्थना का समय दुरूद के लिए रखता हूँ -इस पर रसूल(ﷺ)ने फ़रमाया: ये तेरे सरे दुखों और गमों के लिए काफ़ी रहेगा और तेरे पापों की बख़्शिश का बईस होगा(जामे तिर्मेज़ी:२४५७)

मक़्बूल (स्विकारित प्राथनाऐं)

१.हज़रत अबु हुरैरह (र.ज़) से रिवायत है के रसूल अ्ललाह(ﷺ)ने फ़रमाया:मुझे ये कहना سُبْحَانَ اللّٰه وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ इन सारी चीज़ों से ज़्यादा प्रिय है जिन पर सूरज निकल्ता है।(सही मुस्लिम ६८४७)

२.देखिए:रंज व गम के निवार्ण के लिए नंबर:३

३.हज़रत अन्स बिन मालिक (र.ज़)से रिवायत है नबी(ﷺ)पर जब कोई काम आजाता तो फ़रमाते : يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ(जमे तिर्मेज़ी:३५२४)

४.हज़रत अन्स बिन मालिक(र.ज़) से रिवायत है के मै नबी(ﷺ)के साथ था तो एक आदमी ने प्रार्थना करते हुए कहा يَابَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया: किया तुम जान्ते हो के इस ने किस चीज़ के साथ प्रार्थना की-क़स्म है उस की जिस के हाथ मे मेरी जान है इस ने अल्लाह के उस नाम के साथ की प्रार्थना की है जिस के साथ प्रार्थना की जाए तो क़ुबूल(स्विकार) की जाती है!
(अल अद्ब अल्मुफरिदलबुखारी:३४७५)

५.देखिए : सुबह शाम की प्रार्थनाऐं नंबर:१७

६.हज़रत अब्दुल्लह बिन बरीदह अस्लमी अपने पिता से रिवायत करते है के नबी (ﷺ) ने एक आदमी को प्रार्थना मे पुकारते हुए सुना اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِاَنِّی اَشْھَدُ اَنَّکَ اَنْتَ اللہُ، لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِی لَمْ یَلِدْ وَ لَمْ یُوْلَدْ وَ لَمْ یَکُنْ لَہٗ کُفُوًا اَحَدٌ तो आप(ﷺ)ने फ़रमाया: क़स्म उस की जिस के हाथ मे मेरी जान है इस ने अल्लाह के उस नाम के साथ प्रार्थना की है जिस के साथ प्रार्थना की जाए तो कुबूल(स्विकार) की जाती है- और अगर सवाल किया जाए तो दीया जाता है ! (जमे तिर्मेज़ी: ३४७५)

७.हज़रत अन्स बिन मालिक (र.ज़)से रिवायत है के मै नबी(ﷺ) के पास बैठे हुए थे और एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा था उस ने प्रार्थना की اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِاَنَّ لَکَ الْحَمْدَ، لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ الْمَنَّانُ بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ، یَاذَاالْجَلَالِ وَ الْاِکْرَامِ یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ आप(ﷺ)ने फ़रमाया: निसंदेह इस ने अल्लाह से उस के उस बड़े नाम के साथ प्रार्थना की है जिस के साथ प्रार्थना की जाए तो कुबूल(स्विकार)की जाती है- और अगर माँगा जाए तो देता है(सुन्न अबी दाऊद:१४९५)

८.हज़रत अली बिन अबू तालिब (र.ज़)से रिवायत है के रसूल (ﷺ) ने मुझे यह कलिमात सिखाए और मुझे हुक्म दिया के जब मैं दुख मे हूँ या कोई सख़्ती आए तो मैं इन को कहा करूँ (मुसनद अहमद:७२६)

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحَانَ اللہِ وَ تَبَارَکَ اللہُ، رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

९.देखिए: रंज और दुख के निवार्ण के लिए नंबर :७

१०.हज़रत अबदाह बिन सम्त से रिवायत करते है के रसूल (ﷺ)ने फ़रमाया "रात के समय जिस की आँख खुल जाए और वह जागने पर यह कलिमात कहे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سُبْحَانَ اللهِ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَ اللهُ اَكْبَرُ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ फ़िर प्रार्थना करे اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ फ़िर कोई प्रार्थना करे तो क़ुबूल(स्विकार) की जाती है (सही बुख़ारी:११५४)

११.हिकाय्तह मे कहा जाता है के नबी(ﷺ)के ज़माने मे एक आदमी सौदागिरी कर रहा था के एक चोर ने देखा तो उस सौदागर आदमी को क़त्ल करने का निश्चए किया तो उस सौदागर ने कहा के तुम माल ले लो और मुझे छोड़ दो तो उस चोर ने कहा के तुम्हारा क़त्ल होना निश्चित है, सौदागर ने कहा के मुझे थोड़ा समय दो मैं दो रकआत नमाज़ पढ़ लूँ फ़िर जैसे ही वह नमाज़ समाप्त की तो उस ने दोनों हाथों से प्रार्थना की يَا وَدُوْدُ، يَا ذَاالْعَرْشِ الْمَجِيْدِ، يَا فَعَّالُ لِّمَا تُرِيْدُ، اَسْئَلُكَ بِعِزِّكَ الَّذِىْ لَا يُرَامُ وَ بِمُلْكِكَ الَّذِىْ لَا يُضَامُ وَ بِنُوْرِكَ الَّذِىْ مُلَاَّ اَرْكَانَ عَرْشِكَ اَنْ تَكْفِيَنِىْ شَرَّ كَذَا وَ كَذَا يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ، يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ، يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ तो एक फ़रिश्ता उत्रा और उस चोर को क़त्ल कर दिया और सौदागर से कहा के जान लो के मै के मै तीसरे आकाश के फ़्रिश्तों मे से हूँ और जब तुम ने कहा ऐ मदद करने वाले मेरी मदद कर तो हम ने आकाश के दरवाज़ों के चर्चराने की आवाज़ सुनी,इस दुसरी बार आकाश के दर्वाज़े खुल गए और उन से आग की चिंगारीयों की तरह चिंगारियां निक्लीं और तिसरी बार मे जिब्राईल उत्रे और कहा:इस संकठ/मुसिबत ज़दा (की मदद) के लिए कौन है तो मैं ने कहा के मैं हूँ(इस फ़रिश्ते ने इस सौदागर से कहा)ऐ अल्लाह के बन्दे जान लो के जो भी अपनी मुसिबत/संकठ मे इन शब्दों के साथ पुकारता है तो अल्लाह उस से वह मुसिबत/संकठ दूर कर देता है - फ़िर (वह दुकान्दार) नबी(ﷺ)के पास आया और आप से सारी घटना के बारे मे बताया तो आप(ﷺ)ने फ़रमाया:निसंदेह अल्लाह तुम्हें अपने नामों के अर्थ/ज्ञान और प्रतिभा दिया जब भी कोई उसे इन नामों के साथ पुकारते है तो उत्तर दिया जाता है और जब कोई इन नामों के साथ प्रश्न करता है है तो दिया जाता है !

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

(नुज़हतल मजालिस वल मुन्तख़्बुल निफ़ास-बाब फ़ज़्लुदुआ)

दुआ - ऐ – इस्तिख़ारा

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह(र.ज़)फ़रमाते है के रसूल अल्लाह हमें हर काम मे इस्तिख़ारा करने कि शिक्षा देते जिस तरह हमें कुरआन कि शिक्षा देते,आप फ़रमाते तुम मे से कोई आदमी जब किसी काम का निष्चय करे तो फ़रज़ के बजाए दो रकातें पड़े और फिर यह कहें اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَ اَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَ اَسْاَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ، فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَ لَا اَقْدِرُ وَ تَعْلَمُ وَ لَا اَعْلَمُ وَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ، اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِىْ فِىْ دِيْنِىْ وَ مَعَاشِىْ وَ عَاقِبَةِ اَمْرِىْ، فَاقْدُرْهُ لِىْ وَ يَسِّرْهُ لِىْ، ثُمَّ بَارِكْ لِىْ فِيْهِ وَ اِنْ كُنْتُ تَعْلَمُ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّىْ فِىْ دِيْنِىْ وَ مَعَاشِىْ وَ عَاقِبَةِ اَمْرِىْ، فَاصْرِفْهُ عَنِّىْ وَ اصْرِفْهُ عَنِّىْ وَ اصْرِفْنِىْ عَنْهُ وَ اقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِىْ بِهٖ (सहिह बुखारि :११६६)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ

“उस शख़्स की मिसाल जो अपने रब का ज़िक्र करता है और (उस शख़्स की)मिसाल जो अपने रब का ज़िक्र नहीं करता है ज़िन्दा और मुर्दा की तरह है”

(सही बक़ारी ६४०७)

ISBN 978-969-8665-48-7

04010001

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.